म्हारा दो आखर

राजस्थान री वीरप्रसूता धरा, आपरै रूडै रूप अर सलरै गुणा रै लारै, आखै जग माय, आपरी एक अळघी ओळखाण सू ओळखीजै। इण धरा री मा आपरै सुगनै सपूतां नै, बैन आपरै जोध जवान भाया नै अर स्त्री आपरै हथळेवै सू लेय'र सुहाग रै छेकडलै मोड ताईं, इण धरा री आण र
खातर अणकूत त्याग अर बलिदान दिया अर इण री रजवट नै कायम राखी।

आ बा धरा है जठै बात रा धणी लोग, माथां रा सौदा करता नीं चूक्या। जठै मरणै नै मगळ मान्यो। जठै मा रै उदर माय ई सुगन सरोधा सीख्या। जठै पालणां माय हालरिया नै अैडी लोरी दिरीजती कै-

इला न देणी आपणी, हालरिया हुलराय।
पूत सिखावै पालणै, मरण बडाई माय।।

अैडी धरोहर रो, ओ गरबीलो मरुदेस, जठै रणबाकडै वीर जोधावा नै जलम दियो, बठै ई इण री ऊजळी कूख सूं चूडामण, पदमणी, मीराबाई, करणीमाता, पन्ना धाय मरवण, मूमल अर नीं जाणै अलेखूं वीरागणावां जलमी जिकी आपरै रूप, रग, गुण अर करतबा सू इण रेत रो घणमोलो ख्यात रच्यो। पण, फेर भी आ भोम एक बात सारू जुगा जुगा सू अलूणी रैयी है कै सामंती जुग सूं आज ताईं घणखरै घराणां माय, बेटी रै जलम नै, बेटै रै जलम सू ओछो मानीजै।

सामती जुग मे तो केई लूठै ठिकाणा मे बेटी नै जलमतै ई मार काढण री रीत ही, का बेटी नै परायो धन मान'र उण नै हीणै बरताव सू परोटण रो चाळो हो। जद कै बेटी अर बेटो एक ईज उदर मे लिटपोडा हुवै। तो, पछै ओ फरक क्यू ? ओ भेद क्यू ?

बेटी नै परायो धन मानणो का जलमतै ई गळो टूप'र मारणै री बात सामती जुग ताईं री ईज नीं है। आज भी देस, परदेस रै बडै-बडै समाचार पत्रा माय कदैई-कदैई आ पढणनै मिळै कै फलाणी ठौड माथै 'मादा शिशु की भ्रूण हत्या' का 'लडकी की जन्मते ही

तो कैंवा जिकै सू इण नै आपरी औकात रो तो ठा पडै।

छोगजी बोल्यो, 'ठाकर सा, जिको मिनख बगत अर पून रै रुख मुजब नीं चालै, बो मिनखाजूणी मे सासर समान हुवै है। आज आपणी ठकराई अर राजासाही रो जमानो लदग्यो है। अबै आपा सगळी जनता रै भेळा ई हा। आज सगळा नै आप-आपरी बात कैवण रो पूरो हक है। आज जात-पांत रो भेदभाव जतावणियै नै राज जेळ कर देवै। इण खातर किणी नै ई नीचो समझणो, नीं तो कदैई पैली आछो हो अर नीं अबै आछो है। पण म्है आ जाणू हूँ कै ऐडी बाता आप रै ढब नीं ढूकै है। क्यूकै जिको मिनख आपरै खून नै ई फरक सूं देखै, बो दूजां नै आपरै बराबर नीं मानै।'

जीवणजी बोल्यो, देख रे छोगा, म्हैं अठै थारा उपदेस सुणणनै, का थारै कनै सू सूझ लेवणनै नीं आयो हूं। तूं थारी सूझ थारै कनै राख। म्हैं तो म्हारी सूझ अर मरजी सू ई चालस्यू। रैयी बात खून मे फरक री, सो म्हारै खून मे फरक तो म्है समझू हूँ। म्हैं पूरै गाव नै तो खून में फरक समझण री बात कोनी कैवूं ? पछै थारी आ पचायत अर सगळो गाव म्हारै माथै क्यूं जोर देवै है ? म्हारै खत मांगै है काईं ? म्हैं तो म्हारी मरजी नै अर म्हारै घराणै री लीक रै काम नै आज छोडूं नीं काल छोडू।'

छोगजी बोल्यो, 'ठाकरा, आप आपरी बात सूं पूठा घिरो कोनी अर अबै गाव आप रो लारो छोडै कोनी। क्यूकै दुनिया मे बेटी अर बेटै मे कीं फरक कोनी। अर आप रो घराणो बेटी नै परायो धन समझतो आयो है। पण बो धन बेटै सू घणो प्यारो धन हुवै है। अर ठाकरसा, कान खोल'र सुणल्यो कै साचै अरथ मे माईता रो साचो अर सखरो धन तो बेटी हुवै है। बेटो किण घराणै रो है ? आ कोई कोनी पूछै। पण, बेटी परणीज'र सासरै मे जावता ईं उण री नानी-कानी रै बारै मे जाणीजै। अर बा आपरै घराणै रै नाव सूं ई ओळखीजै। घराणै रो आछो-माडो नांव बेटी सूं हुवै है। इण खातर घराणो बेटै सू नीं है, बल्कि बेटी सूं है।'

छोगजी आगै कैयो, 'जिकै बेटै नै मा-बाप पाळ-पोस'र बडो करै, बो परणीज'र टाबर-टींगराआळो हुया पछै, मा-बाप सू घर-बार, जगां-जमीन मागणनै लाग जावै। नीं दियां माईतां रै कंठा मांय डांग देय देवै। अर जिकी बेटी नै दूध री ठौड़ कढावणी री खुरचण, दही री ठौड छाछ अर लाड-प्यार री ठौड घर रो खोरसो सूपा, बा मा-बाप री हारी-बीमारी, औडी-अबखाई मे माचै कनै खडी सूखै अर उणां री सेवा करै। बो घर रो धन नीं है, परायो धन है ? अर बेटो घर रो धन है. ? क्यूंकै बेटै सू बस चालण री धारणा आद सूं चालती आई है। पण उण

नै अबै आ धारणा तोडणी पडसी। पछै म्है अठै बैठयै लोगां नै पूछू हूँ कै इणा माय सू कितरा'क जणा आपरी धुर मेड सू आपरी पीढया रा नाव जाणै है ? जे कोई जाणै है तो बताओ ?'

छोगजी बोल्यो, 'जीवणजी जिण बात री आप अर आपरो घराणो पूछ झेल राखी है, वा इण मरद समाज री धींगामस्ती है अर गट्टा ताई सुन्न वापरयोडी एक मस्ती है। जिको अपणैआप सूं लुगाई नै हीण मानतो आयो है अर इण बडपण रै कारण कई बडै घराणा में बेटी नै मारणै रो पाप हुवणनै लागग्यो। जद कै इण माटी माय कई ऐडा लोग भी हुया है जिका बेटी रै जलम नै लिछमी अर दूजी देव्या रा औतार मान्या है।'

छोगजी आपरी बात मे बात कैयी कै 'टीकू नाव रो एक जाट आपरै पडौसी गांव रै भीयै जाट री छोरी सूं आपरै छोरै रो साख कर'र जद पूठो आपरै गाव आयो, तो उण रै लार-रो-लार भीयो आयग्यो। उण नै आयोडो देख'र टीकू उण नै, अचरज सू, आवण रो कारण पूछयो। भीयो बोल्यो कै म्हारै घरआळी रो सोने रो टेवटो गायब हुयग्यो। अर किणी स्याणै नै बूझयो तो टेवटो थारै गाव री दिस मे आयोडो बतायो। भीयो घणो ई सकलो-सकलो आ बात कैयी ही। पण टीकू स्याणो आदमी हो। अर बात नै झट ताडग्यो कै सगै रो वैम उण माथै ई है। बो बेगो-सो आपरै घर माय गयो। अर आपरी चौधरण नै सगळी विगत बताई। टीकू, आपरै घर रा चार-पांच टेवटा भीयै सामै राखता थकां कैयो, 'सगा म्हारी भूल सू आप रो टेवटो म्हारै सागै आयग्यो अर म्हैं म्हारै घर रै टेवटा सागै मिला दियो। अबै आप रो टेवटो किसो है, म्है नीं पिछाणू हूँ। अर जे आप री पिछाण में भी नीं आवै है तो आप ऐ सगळा टेवटा लेय जावो अर सगीजी नै दिखा'र आप आपरो टेवटो राख लिया अर म्हनै म्हारा टेवटा पूगता कर दिया।

'भीयो जद उण टेवटा नै ले'र आपरै गांव पूठो गयो तो उण री लुगाई टेवटां नै देख'र हक्की-बक्की रैयगी अर बोली कै आपा तो सगै री इज्जत माथै हमलो कर दियो। क्यूंकै आपणो टेवटो तो आपणै घर माय ई लाधग्यो। बा बतायो कै जद बा भैंस दूवण नै बैठी तो उण रै गळै सू टेवटो खुल'र जा पड्यो हो अर भैंस उण माथै पोठो कर दियो। जद आपणी छोरी पोठा उठावणनै गई तो उण नै टेवटो लाधग्यो। पछै बा कैयो कै बेगा-सा सगै रै गाव पूठा जावो अर टेवटा उणा नै देय'र माफी मागो। अर अबै जे बै आपणी छोरी नीं ली तो पूरै गाव मे इज्जत रा टक्का हुय ज्यासी। बै दोनू ई गैरी चिंता मे डूबग्या। पण भीयो हिम्मत कर'र पूठो टीकू रै गाव गयो।

'टीकू भीयैं री आवभगत करी। पण भीयैं री छोरी लेवण सूं साफ नटग्यो। बात पचायत ताईं पूगी। गाव रा पच फैसलो टीकू माथै ई छोड दियो। टीकू आपरै फैसले मे कैयो कै म्हैं भीयैं री छोरी तो लेवूं कोनी, पण म्हैं म्हारी छोरी भीयैं रै छोरै नै देवूला। टीकू रै इण फैसलै सूं लोगा रा कान खड्या हुयग्या। टीकू बोल्यो, जिण बेटी नै घर री बहू बणा'र ल्यावां हां उण रो लारलो परियो देखणो चाईजै। अर म्हारै सू आ भूल हुयगी कै म्हैं भीयैं रै लारै भीयैं री छोरी रो साख म्हारै छोरै सू कर दियो। क्यूकै जिकी बेटी बहू बण'र जावै है, बा बेटी घराणै री आण हुवै है। बा आछै-माडै खून री पिछाण हुवै है। बेटी पी'रै अर सासरै नै तारणआळी हुवै है। अर बेटी ई उणा नै डुबोवणआळी हुवै है। पछै, जे बेटी भलै घरां री अर भलै सस्कारा मे पळ्योडी हुवै तो बा दोनू ठौडा नै धिन-धिन कैवा देवै। नीं तो, सासरला कैवै कै नीं जाणै किण कुघराणै री रांड आई है। अर बा बेटी ई पी'रला री सात पीढ्या ताईं भुडाय देवै। म्हनै म्हारै खून माथै अर म्हारै घर रै संस्कारा माथै पूरो भरोसो है कै म्हारी छोरी भीयैं री सात पीढ्या ताईं ऊजाळ दवैली। अर जे भीयैं री छोरी म्हारै घरै आजावै तो म्हारी सात पीढ्यां नै डुबोय देवैली।'

छोगजी बोल्यो, 'ओ है बेटी रो जलम। ओ है बेटी रो मान अर ओ है बेटी रो जमारो। बा घर रो घरोट बणाय देवै अर बा ईज घर रो घरकोलियो बणाय देवै। इण खातर घर-घराणो साचै अरथां मे तो बेटी सूं है। बेटै सू कोनी।'

उठै बैठ्या लोग छोगजी री बातां नै बडै गौर सू सुण रैया हा अर बाग-बाग हुय रैया हा। थळकोटां माथै ऊभी लुगायां नै तो छोगजी री बाता अमरित दायीं लागै ही। केई लोग सोच रैया हा कै छोगजी स्यात आज आपरै आपै मे नीं है। पण छोगजी आपरै आपै मे हो अर पूरी तरियां सावचेत हो।

जीवणजी सूखै ठूंठ दायीं भाठो बण्योडो-सो बैठ्यो हो। उण रै मूढै रै भाव सू लागै हो कै इण मिनख माथै इण बाता रो कीं असर कोनी। बो कदैई आपरो पेचो तो कदैई आपरै कनै पड़ी, आपरी डाग नै टंटोळै हो।

छोगजी पूरी पचायत नै कैयो, 'सुणो भई, जिको मिनख, मिनखां रो कैवणो नीं मानै अर बगत री पून रै तेवर नै नीं समझै, ऐडै मिनख . ।'

इतरै मे एक जणो बिचाळै ई बोल्यो, 'धिरकार है ऐडै मिनख रै जमारै नै अर धूड है उण रै माजनै नै जिको समझाया नीं समझै अर मनाया नीं मानै।'

पण जीवणजी रै कीं भावै कोनी ही।

छोगजी थोडी ताळ रुक'र बोल्यो, 'तो भई, पचायत आपरो फैसलो देवो।'

सगळा एकै सागै बोल्या कै 'ठाकरा, फैसलो आप ई सुणावो।'

छोगजी आपरो फैसलो सुणावणै सू पैली एक बार सगळी पचायत कानी देख्यो। पछै, जीवणजी कानी देख'र भळै जीवणजी नै पूछ्यो कै 'ठाकरा आज री पंचायत सामीं आप कीं कैवणो चावो हो तो बोलो ।'

जीवणजी बोल्यो, 'ठाकर छोगजी, फैसलो देवणो तो थारै हाथ मे है। पण मानणो तो म्हारी मरजी है। म्हनै तो इण पचायत सामीं कीं कोनी कैवणो। थे थारी मरजी आवै ज्यू फैसलो करो, कुण पकडै है थारी जीभ ? अर कुण रोकै है थानै ?'

जीवणजी रै इण लूखै उथळै रै सागै लोगा मे रोळो हुवणनै लाग्यो। लोग-बाग कैय रैया हा कै 'ओ तो मिनख कोनी। ओ तो ठूठ है। अर अजू ई उठै ई खड्यो है।'

छोगजी सगळां नै चुप राखता थका आपरो फैसलो सुणायो, 'सुणो भई. आज री पंचायत रो ओ फैसलो है कै आज सू ठाकर जीवणजी रो इण गाव रै सागै होको-पाणी बंद है। अर आज सू ई सगळै गाव रो ओ धरम है कै सगळा ई आप-आपरै ढग सू हमीदा दाई रो बेरो पाडै। बा कठैई मरगी है का जीवै है ? जे बा कठैई जीवै है तो उण नै पूठी लावणो आपणो धरम है। इण सू गाव री स्यान है। गांव रो मान है।'

छोगजी गावआळा सू पंचायत रै फैसलै री हामळ भरावण खातर पूछ्यो, 'काई सगळी पंचायत अर भेळा हुयोडै गाव रै लोग-लुगाया नै ओ फैसलो मजूर है ?'

सगळा मिनख बोल्या, 'हां, मजूर है। हा, मजूर है ।'

पंचायत पूरी हुई। लोग-बाग फैसलै नै सरावता अर जीवणजी नै बिसरावता आप-आपरै घरां कानी जावणनै लाग्या।

जीवणजी भी उठै सू उठ्यो अर आपरी कोटडी कानी जावतो जोर-जोर सूं कैय रैयो हो कै 'छोगजी म्हारै बराबरियो सरीक है। अर सरीक बादै सू म्हनै नीचो दिखावणो चावै है। अर म्हारो होको-पाणी बंद करयो है। पण म्है किसै दिन गाव रै सागै होको-पाणी राख्यो हो ? पछै ओ गाव तो आजादी मिल्या पछै चूडै-चमारा रै भेळो सेळ-भेळ हुय'र कोझी-तरिया भिसळीजग्यो। म्है तो म्हारो होको-पाणी उण दिन ई अळघो कर लियो हो, जिण दिन देस नै आजादी मिळी ही। पछै थे कुण हो म्हारो होको-पाणी बंद करणिया ? बळ्यो डोळ अर बळ्यो माझनो ।'
जीवणजी कैवतो-कैवतो खाथै-खाथै पगा सूं आपरी कोटडी कानी जाय रैयो हो।

जीवणजी आपरी कोटडी पूग'र आपरी ठकराणी कनै गयो। उठै जा'र छोगजी रै बारै मे दो-चार भली-भूडी बातां कैवतो थको, पाना सू गोधम करणनै लाग्यो।

पाना आपरै पोतै नै लियोडी बकरी रै दूध रै फोयां सू उण रै मूंढै मे दूध देय रैयी ही। जीवणजी रीस मे आय'र पाना सू पूछयो, 'राड, उण दाई नै तू कठै काढ दी ? आज म्हारै दुसमणा नै म्हारै माथै कादो उछाळणै रो मौको मिलग्यो पण म्हारै गाभा माथै दाग कोनी लागै। क्यूकै म्है म्हारै घराणै री मरजाद अर मान नै आज तोडू नीं काल तोडू। पण रासमरोवणी राड, तनै विल जरूर ठा है कै बा राड दाई कठै गायब हुयोडी है ?' इतरो कैय'र जीवणजी पाना नै मारण खातर डाग उठा ली। पण डाग ठैरगी। अर उण रा दोनू हाथ ऊपर रा ऊपर रैयग्या। क्यूकै उण रै मन माय चाणचकी आ बात आई कै जे तू इण नै मार नाखसी तो इण छोरै नै कुण पाळसी ? अर ओ पाळया बिना किया बडो हुसी अर किया थारो नांवगो अर किया थारो वस चालसी ? अर वो डागडी नै एकै कानी फेंक'र सांस मे हाफीज्योडो बोल्यो 'देवै री मा, तनै उण राड रो बेरो है कै बा कठै है ? अर तनै आ बात तो म्हनै बतावणी पडसी। नीं तो म्है थारो लारो नीं छोडूंला।'

पाना साधारण-सी मुद्रा मे बोली, 'देवै रा बापू, क्यूं गाभा फाडो हो ? अर क्यू अणूता ई रीस करो हो ? म्है ठाकुरजी री सौगन खाय'र कैवू कै म्हनै हमीदा दाई रो कीं अतो-पतो कोनी कै बा राड कठैई मरगी का बा कठैई जीवै है। हा, रांड जावती-जावती म्हारै जीव नै तस्सियो करगी।'

ठाकर री पैलडी लुगाई बिना औलाद रै बेगी ई मरगी ही। दूसरी लुगाई सू दस-बारह बरसा रो गोपाळसिह नाव रो एक लडको है जिको आपरै मामोसा बनेसिह कनै मुम्बई मे पढै हो। बनेसिह नै ठाकर आपरै कनै सू पईसा दे'र मुम्बई मे धन्धो कराय राख्यो हो।

ठाकर री इण दूजी लुगाई रै अबकै आठ-दस दिना पैली, उण छोरै गोपाळसिह रै पछै छोरी हुई ही। जिकी जलम रै दो-तीन दिनां पछै पूरी हुयगी ही। ठकराणी रा हाचळ दूध सू फाटै हा। पीड सू उण रो बेहाल हो। बा सगळी-सगळी रात रोवती काढै ही तो उण रो दिन घणो ई ओखो निकळै हो। गाव रै ढंग सू उण रो दवा-दारू हुय रैयो हो। पण ठकराणी नै एक पल भी चैन नीं हो।

रोज री भात, ठाकर आपरी तिबारी री चौकी माथै ढाळ्योडै ढोलियै माथै बैठ्यो होको हुडहुडावै हो। बो आपरी ठकराणी रै बारै मे चिंता मे डूब्योडो सोच रैयो हो कै बुढापै मे आ कठैई धोखो नीं देय जावै। पाछली ऊमर है। दस-बारै बरसा रो एक ई तो छोरो है, जिको नीं जाणै कद बडो हुवैला अर कद उण री गुवाडी बधैला ? ठाकर एक ठडो सिसकारो न्हाख्यो। पण थोडी ताळ मे ठाकर मन नै काठो कर'र तय कर्‌यो कै अबै ठकराणी रो स्हैर री किणी बडी अस्पताळ मे इलाज कराणो ईज पडसी। नीं तो पार नीं पडैली। अर बो पूठो ई आपरो होको हुडहुडावणनै लागग्यो।

अठीनै हमीदा गाव मे बडता ई एक जणै नै पूछ्यो, 'अरे भाई, थारै गांव मे ठाकरा री कोटडी कठीनै है ?'

बो उथळो दियो, 'बाई, अठै ठाकरा री कोटडी तो कोनी। पण ठाकरा रो गढ बो सामनै दीखै जिको है।'

हमीदा कर हिम्मत अर ठाकर सुल्तानसिह रै गढ माय बडगी। सामैं, ठाकर चौकी माथै बैठ्यो होको पीवै हो।

मैला-कुचैला गाभा। पगां माय फाट्योडी पगरखी। बुरा हाल हुयोडी बरस पैतीस-चाळीस री एक अणजाण लुगाई नै आपरै गढ री पिरोळ मे बडती देखी तो ठाकर आपरो होको एकै कानी राख'र उण नै गौर सू देखणनै लाग्यो। इतरै मे हमीदा उण चौकी ताईं पूगगी जठै ठाकर बैठ्यो हो।

ठाकर कडक'र पूछ्यो, 'कुण है भई तू ?'

हमीदा ठाकर नै पडूत्तर दिया बिना ई पगोथियां चढी अर ठाकर रै ढोलियै कनै पूगगी। बा झुक'र ठाकर नै मुजरो कर्‌यो।

'अरे भाई, तू कुण, के ?' ठाकर री बोली मे करड़ापणो हो।

हमीदा, ठाकर नै भळै झुक'र मुजरो कर्यो अर गिडगिडा'र बोली, 'ठाकर साब, आभै पटकी है। धरती झेलै कोनी। इण ससार मे म्हारै सू बेसी कोई दुखियारी कोनी। आप री सरण मे आई हूँ।'

ठाकर अचरज सूं पूछ्यो, 'अरे भई तू है कुण ? तू अठै ई क्यूं आई है ? गाव तो घणो ई बडो है। तनै अठै कोई भेजी है काईं ? पछै थारै दुखा रो म्हारै कनै काईं इलाज है ? जे भूखी-तिस्सी है तो कीं खावण-पीवण नै लेयलै अर बन्ना थारै मारग लाग.... !'

ठाकर रो टक्को-सो उत्तर सुण'र हमीदा निरास कोनी हुई। बा ठाकर रै ढोलियै सू थोडी अळघी हुय'र सामीं बैठगी। अर आपरै मेलै-कुचेलै गाभां माय लपेट्योडी उण छोरी नै आपरी पलाथी माथै गेर'र रोवती-रोवती कैयो, 'ठाकरसा, ऊपर तो सावरियो है अर नीचै आप हो। आप म्हारी बात तो सुणो। स्यात आप नै म्हारै माथै दया आय ज्यावै।' अर बा आपरा दोनू हाथ जोडणनै लागगी।

ठाकर हमीदा री बात नै अणसुणी कर'र उण री पलाथी मे पड्यै टाबर कानी देखणनै लाग्यो। दस-बारह दिनां री जिलफ आपरै हाथ रै अगूठै नै मूढै मे लियोडी कदैई आख भींचै ही तो कदैई आख खोलै ही। फूठरो नाक-नक्सो, गोरो रग अर सूक्योडै-सै उण टाबर नै देख'र ठाकर मन माय सोच्यो कै ओ काईं फैताळ है ? ठाकर ओ भी नीं जाणै हो कै इण लुगाई री पालथी मे पड्यो टाबर छोरी है का छोरो ?

ठाकर टाबर कानी सूं ध्यान हटा'र, हमीदा नै भळै पूछ्यो, 'अरे भई, तू कुण है? तू काईं जात री है ? किसै गाव री है ? थारो काईं नांव है ? थारै कनै किण रो टाबर है ? तूं कठै जावै है अर तूं अठै क्यूं आई है ?' ठाकर हमीदा सामीं छाजलो-एक सवाल नाख दिया।

हमीदा हाथ जोड-जोड'र ठाकर नै उथळो देवणनै लागी, 'ठाकर सा, म्हैं मिनख जात री हूँ। ओ सगळो मुलक म्हारो गाव है। लुगाई म्हारी जात है। अर लुगाई म्हारो नाव है। ओ टाबर मिनख रो बीज है। म्हैं, अठै क्यू आई अर म्हैं कठै जाय रैयी हूँ ? ठाकर सा, ओ तो म्हनै ई कीं बैरो कोनी ।' इतरो कैय'र हमीदा डुसक्यां भर-भर अन्तस सूं रोवणनै लागी। उण रै हिवडै रो समन्दर उमड पड्यो। उण रै अन्तस री पीडा उण नै माय सू झकझोर न्हाखी ही। उण री आख्या सू चौसरा आंसू गिर रैया हा। अवै उण रै मूढै सू एक आखर भी नीं बोलीज रैयो हो।

हमीदा रा ऐडा उथळा सुण'र ठाकर जाण्यो कै लुगाई तो खासी भुगतभोगी

है। पछै इण रै रोवणै मे कोई अणकैयी पीडा है। इण रै आसूआ मे कोई साची कहाणी है। ठाकर नै लखायो कै इण री डुसक्या मे अन्तस रो दरद है।

ठाकर हमीदा री ऐडी दसा देख'र पिघळग्यो। उण रो हीयो पसीजग्यो।

ठाकर धीरज सू हमीदा नै थ्यावस बधावतो थको कैयो, देख बावळी, म्हैं भी मिनख हू। म्हनै लागै है कै तू बीखै री मारयोडी है। पण म्हनै थारै बारै मे बात तो पूरी बताणी पडसी। हा, अबार तू घणी थकी-हारी है अर भूखी-तिसी हुवैला। इण खातर तू पैली चाय-पाणी करलै। पछै धीरज सू सगळी बात बता देयी। फैर म्हारै सू जिकी मदद हुवैली, म्है करूला।' इतरो कैय'र ठाकर आपरै दरोगै धनजी नै हेलो मारयो। धनजी झट आयग्यो।

ठाकर धनजी नै कैयो, 'धनजी, इण नै चाय-पाणी करा देयी। इण नै रोटी-बाटी खुवाय'र रातबासै सारू इण रै सोवणै रो सरजाम अठै ई कर देयी।'

ठाकर मन मे जाण्यो, बापडी लुगाई जात है। पछै, कनै छोटो टाबर है। आ इण अन्धेरी रात मे कठै जासी अर कठै नीं जासी ? दिनूगै इण नै इण री विगत पूछ'र कीं मदद कर देवूला।

ठाकर री इण थ्यावस सू हमीदा रो जीव जम्यो। उण नै लाग्यो उण रै घाव माथै जाणै मल्लम री ठडी पाटी बाध दी है। बा धनजी रै लारै-लारै रावळै कानी टुरगी। धनजी उण नै, रावळै रै माय बडणै सू पैली, बण्योडी साळ री चौकी माथै बिठाय दी। उण नै उठै ई चाय-पाणी कराय दी। थोडी ताळ मे धनजी, हमीदा खातर उणी साळ मे सोवण-उठण रो सरजाम कर दियो। रात रो अंधारो पसरणनै लाग्यो।

हमीदा चाय-पाणी करया पछै, धनजी नै धीरै सू कैयो, 'बीरा, 'किणी छोटी-सी कटोरी मे थोडो-सी'क दूध दिराओ नी। इण जिलफ नै पावणो है।' इतरो कैय'र हमीदा उण छोरी रै ऊपर सू गाभो अळघो करयो।

छोरी नै देखता ई, एक पल खातर धनजी रो माथो घूमणनै लागग्यो। अर नीं जाणै उण पल माय उण रै माथै माय कितरी ई बाता रो जाळ बिछग्यो। पण बो आपरै आपै माथै काबू राखतो थको उण छोरी खातर दूध लायो अर पूठो ई आपरै काम-धन्धै माय लागग्यो।

हमीदा नै जीमा-जूठा'र मोडी रात नै, ताजा चिलमिया रो होको भर'र धनजी, ठाकर खातर लेयग्यो। ठाकर होको पीवणनै लाग्यो। धनजी ठाकर रा पग दबावणनै लाग्यो। ठाकर नै इण बेळा होको पावणो अर उण रै पगा नै दबावणै रो काम धनजी रोज करै है अर दोनू जणा मोडी रात ताई हथाई करता रैवै।

होको पीवतो-पीवतो ठाकर, धनजी नै पूछ्यो 'धनजी, उण लुगाई नैं रोटी जीमा दी ? अर उण रैं रातबासैं रो सरजाम कर दियो ?'

धनजी उथलो दियो, 'हा सा उण नै जीमा-जूठा'र रावळै री आगली साळ मे सोवण खातर सरजाम कर दियो है।' इतरो कैय'र धनजी चुप हुयग्यो। पछै बो ठाकर कानी इण आसा सू देखणनै लाग्यो, स्यात ठाकरसा इण लुगाई रै बाबत आगै कीं कैवैला ?

धनजी ठाकर रो वफादार दरोगो हो अर मूंढै लागतो हो। ठाकर उण नै कदेई-कदेई आपरै मन री बात भी कैय देवतो हो।

आज ठाकर सोच्यो कै धनजी घर रो माणस है। स्याणो है। स्यात ओ उण लुगाई नै कीं पूछताछ करी हुवैला ? इण सोच रै कारण उण दोनुवा माय कीं ताळ चुप्पी बापरयोडी रैयी।

पण धनजी नै कीं नीं बोलता देख'र ठाकर खुद ई उण चुप्पी नै तोडता थका पूछ्यो, 'धनजी, इण लुगाई रै बारै मे कीं ठा करयो काई कै आ कुण-काईं है ? अर इणरै कनै ओ टाबर किया है ?'

धनजी बोल्यो, 'ठाकर सा, म्है तो सोच्यो कै आप उण री पूरी जाण-चीण करया पछै ईज, इण नै रावळै मे रातबासै रो हुकम दिया हुवोला। इण खातर म्हैं तो उण सू कीं नीं पूछ्यो। हा, इण री गोदया मे दस-बारैं दिना री छोरी है जिकी इण री तो कोनी दीखै। क्यूकै उण खातर म्है दूध देय'र आयो हूँ।'

छोरी रो सुणता ई ठाकर का तो सूत्यो हो, अर बो झट बैठ्यो हुयग्यो। ठाकर धनजी नै अचरज सू पूछ्यो, के, 'उण री गोदया मे छोरी है ? अर बा उण री कोनी ?'

धनजी बोल्यो, 'हा सा, छोरी है। अर म्हनै इण भात लाग्यो, जाणै आ छोरी इण री तो कोनी।' आ बात धनजी पूरे भरोसै सागै कैय'र ठाकर री पीठ नै दबावणनै लागग्यो।

अबै ठाकर होकै नै जोर-जोर सू हुडहुडावतो सोचणनै लाग्यो। जे ठकराणी इण छोरी नै आपरै हाचळा सू लगाय लेवै तो, ठकराणी सौरी हुय ज्यासी। अर जे ठकराणी इण नै अगेज लेसी तो पाळ-पोस'र बडी कर लेवाला। पछै म्हारै घराणै मे तो लारली चार-पाच पीढया सू छोरी हुयोडी कोनी, इण नै ई घर मे जलम्योडी मान'र मनस्या पूरी कर लेवाला। ठाकर री आख्या माय तारा चमचमावणनै लाग्या।

पण थोडी ताळ पछै ठाकर सोच्यो कै 'ठाकर सुल्तानसिह, तू बावळो

हुयग्यो काई ? थारै मन माय ऐडा विचार आया तो क्यू आया ? तूं जाणै है काई, कै आ कुण है ? अर थारै मान्या सू थारो कुटम्ब-कबीलो, सगा-सोई, गिनायत अर आखो जमानो, आ किया मान लेसी कै आ छोरी थारै घर मे जलम्योडी है ? पछै साच नै लुकोय'र किता'क दिन लुकासी ? एक दिन जद सगळां नै ठा पड ज्यासी तो थारै ठिकाणै री साख धूड मे मिल ज्यासी अर लोग-बाग थारै माथै आंगळ्यां उठासी। अर जे तू सगळा नै भेळा कर'र उणां रै सामीं आ बात राखै कै तू इण छोरी नै थारी छोरी मानै है। इण नै पाळैलो-पोखैलो अर ब्या-थ्या'र आधी करैलो। पण क्यू ? थारै ऐडी काई अडी पडी है कै तू उडतो तीर लेवै ?'

ठाकर ऐडै विचारा मे कीं ताळ तो घुळतो रैयो, पछै बो इण विचारां सूं बारै निकळ'र होको पीवणनै लागग्यो। पण ठाकर इण विचारा सूं बारै नीं निकळ सक्यो। मूढै आगै इतरी बडी रात ही। अर ठाकर रै मन माय रैय-रैय'र अैडा विचार बार-बार आय रैया हा, 'कै भाई- गिनायत, कुटम्ब- कबीलो अर गाव- राव जे म्हारी बात मान लेवै अर बै सगळा इण नै म्हारी छोरी मान'र म्हारो सागो भी देय देवै। पण काई ठा आ छोरी किण रो खून है ? काई जात री है ? किसै घर-घराणै सूं है ? कुण इण रा मा-बाप है ? काई ठा किणी विधवा रो कळक है का किणी कुआरी रो पाप है ? पछै म्हैं किणी रो कळक का पाप म्हारै गळै में क्यूं बाधू ? फेर काई ठा, आ लुगाई टाबरां नै उठावणआळी कोई लुगाई है अर स्हैरां माय जाय'र बेचणै रो धंधो करती हुवै ? अर स्यात आ किणी रो टाबर उठाय लाई हुवै ? पछै काल-कदास कोई लारै व्हार लेय'र आय ज्यावै तो पूरै गाव मे अर आसै-पासै रै चौखळै मे म्हारी बडी भारी बदनामी हुवैला अर लोग धूड घालैला पाखती मे। पछै ठकराणी खुद बडै घर री बेटी है। बा म्हारी बात मान'र इण छोरी नै किया हेजैला अर किया अगेजैला ?

ठाकर ऐडै विचारा माय उळ योडो अर गेलो भूल्योडै बटाऊ दायीं आपरै ढोलियै माथै उथळ-पुथळ हुवणनै लाग्यो। ठाकर नै इतरै गैरै सोच मे डूब्योडो देख'र धनजी सोच्यो कै अबै ठाकर सा नै मुजरो कर'र अठै सूं जावणै मे ई सार है। अर धनजी मुजरो कर'र उठै सूं चल्यो गयो।

ठाकर ढोलियै माथै उथळ-पुथळ हुवतो फेरू सोच्यो कै उण टैम इण लुगाई रै रोवणै मे तो दरद हो अर इण लुगाई में कीं सच्चाई लागी ही। पण दिनूगै इण सूं पूछताछ कर'र इण नै कीं देय'र अठै सू बहीर कर देस्यां। ठाकर अपणै आप सू उळझ्योडो अर ससोपज मे पड्योडो कीं ताळ तो जागतो रैयो, पछै नीं जाणै कद उण री आख लागी अर बो सोयग्यो।

अठीनै ठाकर ऐडी दसा मे हो तो उठीनै ठकराणी आपरै हाचळा री पीड सूं बुरी तरिया तडफै ही। एकै कानी, रावळै री आगली साळ मे, हमीदा उण छोरी नै लियोडी, आपरा पल्ला बिछा-बिछा'र खुदा सू दुआ मागै ही, 'या खुदा, ओ ठाकर, जे म्हनै आपरै घर रो खोरसो करणै सारू राख लेवै तो म्है इण री छाया मे इण छोरी नै पाच-छव मईना री कर'र आगै कठैई बीजी ठौड, म्हारो मुह-माथो लेय'र निकळ जाऊली।'

जोग-सजोग सू उण रात ठकराणी नै सभाळणआळी लुगाई नीं आई ही। अर ठकराणी पीड सूं कुरळा रैयी ही। हमीदा नै ठकराणी रो रोवणो अर कुरळावणो साफ सुणीजै हो। बा झट ताडगी कै ओ कळाप तो जापैआळी लुगाई रो ई हुय सकै है। पण इण रो बेरो किया करीजै ? ओ सवाल हमीदा रै सामीं हो।

थोडी ताळ मे धनजी उण साळ रै आगै सू निकळ्यो जिकी मे हमीदा बैठी ही। धनजी स्यात ठकराणी खातर दवा-दारू रो सरजाम कर रैयो हो। हमीदा धीरै सू धनजी नै पूछ्यो, 'बीरा, रावळै मे किण रै ई कोई तकलीफ है काई ?'

धनजी थोडो-सो रुक्यो अर विगत बतावतो थको कैयो, 'ठकराणी सा रै बाई सा हुया हा, अर पूठा हुयग्या। अबै उणा नै हांचळा री तकलीफ है ।' धनजी पूठो ई खाथै-खाथै पगा सूं आपरै काम मे लागग्यो।

धनजी सू विगत सुण'र हमीदा रै पगा माय घूघरा-सा बधग्या अर हमीदा उण छिणां मांय नीं जाणै कितरा ई सुपना संजोयगी। पण उण री धनजी सू उण टैम कीं कैवण री हिम्मत नीं हुई।

थोडी ताळ मे जद धनजी फेरूं उण साळ रै आगै सूं निकळ्यो तो इण बार, हमीदा उण नै रोक'र बस इतरो-सो निमळाई सागै कैयो, 'बीरा जे ठकराणी-सा रो हुकम हुवै, तो म्हैं उणां नै देख'र कीं दवा-दारू करूं, जिकै सू उणा री आ रात सौरी निकळ जावै। म्है थोडो-घणो दाईपै रो काम जाणू हूँ।'

धनजी नै ठकराणी सा सू अणकूत हेत हो। धनजी अर ठकराणी ऊमर मे बराबर-सा हा। पण ठकराणी धनजी नै कदैई आपरो चाकर नीं सम यो। बा उण नै वेटै दायीं राखती ही। अर धनजी भी नीयत रो साफ-सुथरो मिनख हो। बो ठकराणी नै मा सूं बेसी आदर देवतो हो। धनजी री भी आ सोच ही कै जे ठकराणी सा इण छोरी नै आपरै हांचळां सूं लगाय लेवै तो उण रो पीड सूं छुटकारो हुय जावै। पण उण मे छोटै मूढै बडी बात करणै री हिम्मत कोनी ही। बो हमीदा रै दाई हुवणै री बात सुण'र सीधो ठकराणी सा कनै गयो अर बोल्यो, 'मा सा, आज आपणै गढ माय एक अणजाण लुगाई, दस-बारै दिनां री छोरी नै लियोडी आई है

अर ठाकर सा रै हुकम सू उण नै रातबासो दियो है। उण रो रावळै री आगली साळ माय सोवणै-उठणै रो सरजाम कर्‌यो है। बा थोडो-घणो दाईपै रो काम जाणै है। जे आप रो हुकम हुवै तो बा आप नै देख'र कीं दवा-दारू कर देवै, जिण सू आप री रात सौरी निकळ जावै।'

दरद सू कुरळावती ठकराणी, धनजी री आधी बात सुणी अर आधी अणसुणी मे इतरो-सो कैयो, 'जे बा दाईपै रो काम जाणै है तो, उण नै माय भेज दै।' ठकराणी री उण टैम मरतो काई नीं करतो जैडी हालत हुयोडी ही।

हमीदा उण छोरी नै लियोडी धनजी रै सागै ठकराणी री साळ मे बडी। हमीदा, ठकराणी नै मुजरो कर्‌यो। अर उण छोरी नै एकै कानी, जमीन माथै सुवाण दी।

ठकराणी हमीदा नै देखी, अधेड ऊमर री, डील मे थक्योडी। मैला-कुचैला गाभा पैर्‌योडी अर बीखै री मार्‌योडी-सी कीं ढग री लुगाई लागी। ठकराणी नै लाग्यो कै ओ कोई छळावो तो कोनी।

हमीदा, ठकराणी नै देखी तो नाक-नक्स सू अर रग सूं असली रजपूती रूप। पण उण रंग-रूप नै हाचळा रो दरद जाणै मठोठी देय रैयो हो। उणी हालत मे ठकराणी, हमीदा नै पूछ्यो, 'बाई, काई नाव है आप रो ? आप किण साख मे हो ? किसो गांव है आप रो ? अर आप दाईपै रो काम जाणो हो काई ?'

अबै हमीदा रै सामीं ठकराणी रा ऐडा सवाल डूगर दाई खड्या हुयग्या। जिण नै लाघणो हमीदा खातर दौरो ई नीं हो बल्कि घणी अबखाई रो काम हो। बा सोच्यो, जिण बेळा ठाकर सा ऐडा सवाल कर्‌या हा तद उणां सू तो म्हैं, रोय-धोय'र लारो छुडाय लियो। पण अबै ठकराणी तो खुद लुगाई जात है। इण सू म्हैं किया तो लारो छुडाऊ अर इण नै काई उथळो देवू ? जे इणा नै साफ-साफ साची बात बतादी, तो ऐ म्हारी बात माथै किया भरोसो करैला ? अर जे इणा नै झूठ कैवूंली तो साच रो बेरो पड्यां पछै नीं जाणै म्हारै माय काई करैला ? हमीदा ऊकत सू काम लियो। बा ठकराणी रै सगळै ई सवाला नै टाळ'र बोली, 'ठकराणी सा, म्हैं थोडो-घणो दाई रो काम जाणू हूॅं। जे आप रो हुकम हुवै तो, आप रा हाचळ हळका करणै सारू कीं उपाय करू। आप म्हनै म्है कैवू जिकी चीजां मगवाद्यो।' हमीदा चीजा रा नाव गिणावणनै लागी। इण बिचाळै ठकराणी री निजर सामीं सूती छोरी माथै गई।

छोरी फूठरी-फरी, गोरी-निछोर, नाक-नक्स री सातरी। ठकराणी नै लाग्यो जाणै आ बा ई छोरी है, जिण नै म्हैं अबार-अबार जलम दियो हो। ठकराणी

आपरी आंख्यां उण छोरी माय गाड दी। छोरी फ्या फ्या कर'र रोय रैयी ही। इतरै मे ठकराणी रै हाचळा में इतरै जोर सू पैनो आयो कै उण री काँचळी री टूक्या माय सूं दूध री सीकां चालणनै लागी। अबै ठकराणी आपरै आपै माथै काबू नीं राख सकी अर हमीदा नै पूछयो, 'बाई ओ टाबर किण रो है ? अर ओ आप रै कनै किया है ?'

हमीदा बोली, 'बाई सा, इण नै माटी माय सू लेय'र आई हूँ। अर आ माटी री एक सिसकती लोथ है। जे इण नै आप जीवणदान देय देवो, तो आप रो सावरियो भलो करसी अर दुनिया में आप री बातां चालसी।' पछै बा रुक'र आगै कैयो, 'बाई सा, स्यात ठाकुरजी महाराज, इण लोथ नै आप री छतरछाया में पळण खातर बणाई है तो काईं ठा ? अर काई ठा, सावरियो, जे इणी खातर म्हनै आप रै चरणा मांय भेजी है ? कुण जाणै ओ जोग-सजोग क्यूं हुयो है ? म्हैं तो कीं नीं जाणूं सा ! म्हैं तो कीं नीं जाणूं ।' अर हमीदा सिसक्या भर-भर रोवणनै लागी।

उठीनै ठकराणी सा नै भळै पैनो आयो अर इण बार भी दूध री सीका सूं उण री कांचळी री टूक्यां झरणनै लागगी। अबै नीं जाणै ठकराणी रै हिवडै मे उण छोरी खातर एक अणकैयो हेत बापर्‌यो अर बा हमीदा नै बोली, 'बाई इण छोरी नै म्हनै देवो।' हमीदा उण छोरी नै ठकराणी रै हाथा माय देवण सू पैली एक बार ऐड़ी निजर सूं देख्यो जाणै इण छोरी माथै सांवरियै री असीम क्रिपा हुयगी हुवै अर हमीदा रो अन्तस उण नै कैय रैयो हुवै कै हमीदा बेगी कर, कठैई ओ पळ टळ नीं जावै। अर हमीदा उण छोरी नै आपरै धूजतै हाथां सू ठकराणी रै हाथां मांय देय दी।

ठकराणी उण छोरी नै आपरै हांचळा सूं लगायली। छोरी हांचळां नै चसड . चसड चूंघणनै लागी अर ठकराणी रो जीव सौरो हुवणनै लागग्यो। ठकराणी नै लाग्यो कै उण नै नूईं जिन्दगाणी मिलगी है।

आठ

हाचळा री अबखाई सू ठकराणी अबै ताई री राता जागती काढी ही अर दिन तडफ-तडफ बिताया हा। इण रात बा छोरी ठकराणी रै हाचळा सू लाग्योडी चूंघ रैयी ही, जिण सू ठकराणी नै बेथाग आराम मिल रैयो हो। इण सूं नीं जाणै ठकराणी री आख कद लागी अर उण नै गैरी नींद आयगी। अर बा छोरी हाचळा सू लाग्योडी ठकराणी रै सागै ई सूती पडी रैयी।

ठकराणी रै ढोलियै कनै बैठी हमीदा कदैई उण छोरी कानी, तो कदैई ठकराणी कानी, देखती थकी मालिक रा सुकर मनावै ही, तो कदैई बा चाणचकी, अणहूणी चिंता मे सुकड-सी जावै ही। बा ठैर-ठैर सोचै ही कै दिनूगै ठाकर का ठकराणी, तनै आपरै रावळै सू धक्का मार'र काढ तो नीं देवैला ? क्यूंकै तू एक अजाण खून नै, अर बो ई छोरी री जात नै, एक बडै घर री लुगाई रो दूध चूंघा दियो है। राड, तनै मारैला अर थारै माय ऐडी करैला कै कुत्ता ई खीर नीं खावैला। अर बा थर-थर कापणनै लागगी ही।

हमीदा पछतावै री झळ माय झुळसीजती अर चिंता री भोभर माय सिकती, सोच रैयी ही कै जीवडा, म्हनै तो इण घर मे बडता ई साची-साची बात बता देवणी चाईजै ही। म्है म्हारै बारै मे अर इण छोरी रै बारै मे इण लोगा नै कीं नीं बता'र बडो भारी जुलम कर्‍यो है। जे इण रै घराणै मे भी छोरी नै हुवता ई मारण री रीत हुई तो ओ ठाकर भी आ ई कैवैला कै तू इण छोरी नै म्हारी ठुकराणी रो दूध क्यू चूघायो ? म्है तो इण छोरी नै जीवती नीं छोडूला। तूं इण छोरी नै ठकराणी रै चूघाय'र आछो काम नीं कर्‍यो है। काई ठा ठकराणी रै हुयोडी छोरी आपै ई मरी है का उण नै हुवता ई ओ ठाकर मार दी है ? कुण जाणै ? विचारां री ऐडी उधेडबुण रै माय उळ चोडी हमीदा आपरै फाटचोडै ओढणै रो पल्लो पसार-पसार मालिक सू अरदास करै ही कै हे मालिक, इण औडी री बेळा मे तू म्हारी मदद करी।

हमीदा इण बिचाळै उण छोरी नै ठकराणी रै आगै सू उठावणै री सोची। पण उण री हिम्मत नीं हुई। पछै बा थोडी ताळ रुक'र सोच्यो कै आ छोरी तो स्यात दिनूगै ताईं मर ज्यासी ! क्यूकै आ जलम्या पछै लुगाई रो दूध इत्तै दिना सू पैली बार पीयो है। स्यात इण रो जीवणो दौरो है ! पछै बा एक ठडो-सो सिसकारो न्हाख'र बडबडाई, 'का तो आ आपै ई मर ज्यासी का इण नै ओ ठाकर मार न्हाखसी अर पछै म्है म्हारो मुह-माथो लेय'र पूठी म्हारै ठौड-ठिकाणै लागसू। पण जीवडा, तनै उठै कुण जीवती रैवण देसी ?' ऐडी सोच री भट्टी माय बा मक्की रै सिट्टै दाई सिक रैयी ही।

पण मारणआळै सू जीवावणआळो बडो हुवै है। पछै विधाता री बात नै तो विधाता ई जाणै, मिनख तो उण रै बारै मे कोरी अटकळा ई लगा सकै है, का आपरी बुद्धि रै मुजब सोच सकै है।

जद हमीदा इण विचारा माय उळ योडी ही तो नींद मे सूती ठकराणी एक भयानक सपनो देख रैयी ही कै भूडै चैरै रो, डरावणै डोळ रो, बेडोळै डील रो एक बूढो खूसट, गाव रै एक-एक घर माय सूं छोरया नै काढै है, अर आपरै हाथ मे लियोडै गंडासै सूं उणा नै बिना हया-दया रै बाढै है। छोरया री मावा धाड मार-मार बुरी तरिया सूं कूक रैयी है। सगळै गाव मे कुरळाटो माच्योडो है। घर-घर मे च्यारूमेर खून ई खून खिड रैयो हो। मरद आप-आपरै घरा माय लुक्योडा बैठ्या है। कोई उण रो सामनो नीं कर रैयो है। बो खूनी मिनख आपरै हाथ मे खाडो लियोडो ठकराणी री साळ मे बड्यो अर बडता ई गरज्यो कै म्हैं तो इण छोरी नै ईज ढूंढ रैयो हो। अर बो आपरै खून सू भर्‌योडै हाथा सू ठकराणी रै सागै सूती छोरी नै बाढण सारू उठावणनै लाग्यो तो ठकराणी झिझक'र, एक जोर री चिरळाटी सागै हबड'र ऊठी अर उण छोरी नै आपरी छाती सूं चिपकावती थकी एक चिरळाटी मारी अर कैयो, 'नीं नीं आ म्हारी छोरी है आ म्हारी छोरी है म्है इण नै नीं देवूंली म्हैं इण नै नीं देवूंली। नीं नीं आ म्हारी ।' ठकराणी परसेवै सू बुरी तरिया भीजगी ही। उण री छाती सांस सूं फूल रैयी ही। बा आपरी फाट्योडी आख्या सू हमीदा कानी टुकर-टुकर देख रैयी ही। उण रै मूढै सूं कीं नीं बोलीज रैयौ हो। बा आपरी छाती सू चिपकायोडी छोरी नै बारबार देख रैयी ही।

हमीदा झट समझगी, स्यात ठकराणी नै कोई डरावणो सपनो आयो हुवैला। बा ठकराणी नै ध्यावस बधावती थकी कैयो, 'काईं बात है, बाई सा ? ल्याओ इण छोरी नै म्हनै देयदयो।' अर बा उण छोरी नै ठकराणी सू लेवण लागी।

ठकराणी उण नै मना करती बोली, 'नीं नीं आ म्हारी छोरी है। म्हैं इण नै किण नै ई नीं देवूंली। नीं नीं देवूंली।' अबै ठकराणी उण छोरी नै पूठी आपरै हाचळा सू लगायली।

नौ

ठकराणी री ऐडी पुल्तगी रै सागै छोरी नै अपणावण री बात सूं हमीदा नै एक अणकैयो सुख लखायो। पण इण अणकैयै सुख रै मायनै हमीदा एक अणकैयी कप-कपी सूं भळै कापणनै लागी। अर बा आपरै मायलै डर सूं डरूं-फरू-सी हुयोडी कदैई ठकराणी कानी तो कदैई उण छोरी कानी देखणनै लागी।

ठकराणी आपरी सागी हालत मे आयगी ही। बा उण छोरी नै चूंघावती-चूंघावती सोच्यो कै म्हनै ऐडो सुपनो क्यूं आयो ? पछै इण छोरी कानी म्हारो तर-तर झुकाव अर पल-पल हुवतो हेत, कठैई म्हारै खातर मूघो तो नीं पडसी ? अर म्हारी काया मे आ छोरी उळझती क्यू जाय रैयी है ? म्हैं तो इण रै बारै मे कीं नीं जाणू हूँ। काईं ठा ओ किणी रो पाप है का ओ म्हारै सू कोई पुण्य रो काम हुय रैयो है ? फेर बा एक लम्बो सास लेय'र बोली, हे भगवान, तू ओ काई रास रचावणो चावै है ?'

पछै ठकराणी अपणैआप सूं कैयो कै, 'हाचळा रै दुख सूं लुगायां मरै थोडी ई है जिको तूं इण छोरी नै थारै हाचळा सू लगाली ? फेर जे ठाकरसा नै ठा लाग्यो कै आ छोरी रातभर म्हारै हाचळा सू लाग्योडी म्हारो दूध चूंघ्यो है, तो नीं जाणै ठाकरसा म्हारै माय काई करसी ..?' बा उण छोरी नै आपरै हाचळा सू अलघी करणनै लागी। पण उण नै रातआळो सुपनो याद आयग्यो अर बा उण छोरी नै आपरी छाती सू चिपायली।

ऐडै सोच-विचार अर ससोपज मे पूरी रात बीतगी अर दिन ऊगग्यो।

दिनूगै धनजी ठकराणी खातर चाय लेय'र आयो। ठकराणी री गोद्या माय उण छोरी नै देखी। उण रै पगा रै जाणै घूघरा बंधग्या। हमीदा भारी आंख्या सूं उण रै कनै बैठी ही। धनजी आपरी इण अणजाण खुसी मे खाथै-खाथै पगा सूं घर रै बीजा कामां नै बेगो-बेगो करणनै लाग्यो अर आपरै हाथा रै काम नै निपटा दियो।

पछै धनजी एक हाथ मे चाय री गिलास अर दूजै हाथ मे ताजा चिलमिया रो होको लेय'र ठाकरसा री बैठक मे पूग्यो अर उणा नै चाय देय'र होको कनै राख दियो।

ठाकर चाय पीवतो-पीवतो धनजी नै पूछ्यो, 'धनजी, ठकराणी सा री रात नै तबियत किया रैयी ?

'मा सा रो, रात घणो ई जीव-सौरो रैयो। अबै बै बिलकुळ ठीक दीखै है। क्यूंकै जिकी लुगाई नै, आप कालै रातबासो दियो हो, बा लुगाई दाईपै रो काम भी जाणै है अर बा आखी रात मा सा री देखभाळ करै ही।'

'तो बा लुगाई रावळै रै माय ताई पूगगी ?' ठाकर त्यौरयां चढा'र अचरज सू पूछ्यो, 'तो आपणै गाव री दाई कठै मरगी ? बा रात क्यू कोनी आई ? अर आपणी दोनू माणसा कठै है ?'

अबै धनजी सकतो अर डरतो-सो बोल्यो, 'सा, आपणी दोनूं माणसा मांय सू, धूडीबाई रो तो बाप मरग्यो, उण नै गई नै तो आज पाच-छव दिन हुवणनै आया है। अर अबै बा बारह दिन पूरा हुया पछै ई स्यात आवैला। अर चावली रै बाल-गोपाळ हुवणआळो है, सो उण नै तो आप खुद ई छुट्टी फरमाई ही, सा।'

ठाकर अबकै हळकी-सी रीस सू पूछ्यो, 'तो गैला, ठकराणी सा नै कुण सभाळै है ?'

धनजी, ठाकर रा तेवर देख'र अबकै कीं बेसी डरतो-डरतो बोल्यो, 'सा, मा सा कनै दिन मे आसै-पासै री एक-दो लुगाया आवै है अर बै आपस में हथाया करै अर उणा नै सभाळ भी लेवै है। घर रो, ऊपर रो काम सगळो म्हे सभाळ राख्यो है सा। अबै आ लुगाई आयगी। जिकी आपणै गाव री दाई नीं आवैली, उण टैम ताई मा सा री सार-संभाळ कर लेसी। आ बापडी दुखा री मारयोडी लागै है।'

ठाकर कडक'र बोल्यो, 'बापडी रा कुण कैयोडा, आ कुण है ? तन्नै ठा है काई ? बावळो कठैई रो ! अरे, आपां नै अजू ताई तो ओ ठा ई कोनी कै आ कुण है ? अर आपां इण नै ठेठ रावळै माय ई लेयग्या ? पछै इण कनै टाबर न्यारो है। इण रो भी बेरो कोनी कै ओ किण रो है ? अर आ कठै सू ल्याई है ? जे काल-कदास नै कोई फैताळ खड्यो हुयग्यो तो ..?'

ठाकर री बात पूरी हुई कोनी ही, इण बिचाळै ई धनजी बोल्यो, 'तो सा, उण छोरी नै तो मा सा आपरी गोदी ।' धनजी कैवतो-कैवतो इण भात रुकग्यो जाणै बोलतै-बोलतै रेडियै री बिजळी चली गई हुवै।

'तो ठकराणी सा उण छोरी नै आपरी गोद्या मे लेय राखी ही ? तू आ ई तो कैवणो चावै हो नीं ?' ठाकर होको हुडहुडावतो ऐंक सूकी हसी हास्यो।

फेर ठाकर धनजी नै कैयो, 'धनजी, तू मायनै जाय'र ठकराणी सा नै कैय दै कै ठाकर सा रावळै में आय रैया है अर हा, उण लुगाई नै भी उठै ईज राख्या।'

अबै धनजी रै मन माय बडो भारी पछतावो खड्यो हुयग्यो। उण नै लखायो कै भरयोडी बन्दूक सू जिण भात गोळी निकळै, उणी भात उण रै मूढै सू बात तो निकळगी। पण अबै इण रो निसाणो कुण हुवैला ? पण उण नै ठाकर सा रै हुकम मुजब ठकराणी सा नै कैवणो जरूरी हुयग्यो। अर बो रावळै मे जाय'र ठकराणी सा नै कैयो, 'मा सा, ठाकर सा मांय पधार रैया है।'

ठकराणी धनजी रै कैवणै रै ढंग सू अर मूढै रै भावा सू झट ताडगी कै धनजी रै मूढै सू की बात इण छोरी रै बाबत ठाकरसा रै सामीं निकळगी हुवैला अर ठाकरसा इणी खातर ई रावळै माय पधार रैया है। नीं तो सवा मईनै सू पैली कोई मरद जच्चा री जचगी कनै नीं आवै ।

हमीदा आ बात सुण'र कापणनै लागगी। पण ठकराणी सा उण छोरी नै आपरी गोदी मे लियोडी बैठी रैयी।

आ जग जाणीजती बात है कै दूजी बार परणीज्योडो मरद, कितरो ई सूरमो का सबळ क्यूं नीं हुवै, पण बो आपरी दूजबर लुगाई सामीं, का तो कायर हुवैलो, का निमळो हुवैलो। पछै ठाकर सुल्तानसिंह तो बुढापे मे आपरी ऊमर सू घणी छोटी ऊमर री लुगाई परणीज्योड़ो हो। सो ठाकर नै ठकराणी सू मोकळो हेत हो। अर ठकराणी री बात नै टाळण रो उण मे दम नीं हो। बिया दोनुवां माय मोकळो प्यार हो अर एक-दूजै री बात मानता हा।

अबै ठाकर हाथ मे होको लियोडो, मन मे राजी हुयोडो, ऊपरलै मन सू रीस मे आयोडो, रावळै मे बड्यो। बडतै ई जोर सू खखारो कर्‌यो। पछै जच्चा री साळ आगै जाय'र खड्यो हुयग्यो। जच्चा री साळ रै बारणै आगै बढिया कपडै रो पडदो लाग्योडो हो।

ठाकर बारै खड्यो-खड्यो पूछ्यो, 'अबै आप री तबियत किया है ?'

ठकराणी उथळो दियो, 'लारला दिन तो घणा ई औखा अर अबखाई रा दिन हा। राता रोवती काटी ही अर दिन-दिन तडपती ही। अबै रात सूं कीं जीव-सौरो है। आ आयोडी बटाऊ, म्हारै खातर देवी रै रूप मे आई है। म्हनै ऐडो लखावै है कै आ म्हनै नूंई जिंदगाणी दी है।'

ठाकर समझग्यो कै ठकराणी इण छोरी नै अंगेज ली है। अर बो मन माय राजी हुयो। अठीनै हमीदा रो मन खुसी सू फूल्यो नीं समावै हो। उण रै चैरै री आभा देखण जोग ही। पण हमीदा आपरी खुसी नै छिपायोडी चुपचाप बैठी ही। तो उठी नै ठाकर आपरी खुसी माथै काबू राखता थका ठकराणी नै पूछ्यो, 'तो आ आयोडी लुगाई दाईपै रो काम जाणै है काई ? पण इण रै कनै तो दस-पन्द्रै दिनां री एक जिलफ भी है नी ! बा कठै है ?'

ठकराणी गभीर हुय'र उथळो दियो, 'ठाकर सा, बा लडकी म्हारी गोदयां माय है। अर म्हैं रातभर इण नै म्हारै हाचळां सूं दूध दियो है। इण सूं म्हारो जीव-सौरो तो हुयो ई है सागै-सागै इण बच्ची नै भी प्राण मिल्या है। पछै म्हनै ऐडो लाग्यो, कै म्है बच्ची नै खोय'र बच्ची पाई है। . अर भगवान, जाणै बच्ची नै म्हारै सू लेय'र म्हनै बच्ची पूठी दी है ।'

ठकराणी रै ऐडै उथळै सू ठाकर मन मे राजी हुवतो थको ऊपरलै मन सू हळकी सी रीस भर'र कैयो, 'ओ काई कर्‌यो, ठकराणी सा आप ? इण छोरी नै आप, आपरो दूध देय दियो ? ओ तो आप भौत माडो काम कर्‌यो . । जठै ताई इण बच्ची नै आप गोदयां माय लियोडा हो बठै ताई तो ठीक है। पण एक अणजाण खून नै आप, आपरै हाचळां सू लगाय'र दूध देवण री कोई समझदारी नीं करी है ।'

ठकराणी अबकै कीं करडाई सूं, पण सजीदा हुय'र बोली, 'ठाकर सा, आ किणी रो ई खून हुवै पण मिनख जात रो खून है। पछै, आ किणी जात री अर किणी ठौड़ री हुवो, इण नै म्हारै कनै भगवान भेजी है। अर म्हैं ली है। आज सूं आ म्हारी बेटी है। आ म्हनै जिन्दगाणी दी है अर बदळै मे म्हैं इण नै जिन्दगाणी दयूंली आगै सांवरियै रै हाथ है।'

ठाकर कैयो, 'ठकराणी सा, आप ऐडो पक्को विचार करणै सू पैली ओ तो सोच्यो हुवैलो कै आपां नै, आपणै घराणै नै, सगळो गाव-रांव, भाई-गिनायत अर सगळो चौखळो काई कैवैला ? किण दीठ सू देखैला ? अर आपणै बारै मे काई-काई बाता बणावैला ? क्यूंकै म्हारै पडदादा अभयसिंहजी रो ओ ठिकाणो पूजीजतै ठिकाणां मांय सू है। इण री लाखीणी साख है। इण रो दूर-दूर ताई नाव है। कठैई ओ सगळो मिटियामेट तो नीं हुय ज्यावैलो ? इण खातर आप नै इण बच्ची रै बारै में कीं जाणणो तो जरूरी हो कै आ है कुण ?'

ऐडी बाता सू हमीदा नै जद उठै रो वातावरण गंभीर हुवतो लाग्यो तो बा झट साळ रै बारणै आगै लाग्योडै पडदै नै अळघो कर'र ठाकर नै मुजरो करता

थकां कीं कैवणनै लागी। पण इण बिचाळै ई ठाकर उण नै पूछ्यो, 'हा भई, अबै तू थारै बारै मे सगळी बात बता, नीं तो थारो अठै सू जावणो औखो कर दयूला।' ठाकर रै कैवणै मे खासी करडाई ही।

अबै हमीदा हाथ जोड'र ठाकर सा नै बतावणनै लागी, 'ठाकर सा, म्हारो नाव हमीदा है। म्हैं जात री मुसळमान हूँ। पछै ठाकर सा, दुनिया मे लुगाई री कीं जात नीं हुवै। लुगाई री जात तो लुगाई हुवै। हमीदा उण छोरी रै बाप-दादै अर नाना-नानी रो नाव अर गाव बतावता थकां कैयो, 'ठाकर सा, म्हारै कनै ओ टाबर घराणै रै राजपूत रो खून है। इण रो नानाणो-दादाणो दोनू ई ऊजळै पख रा धणी है। इण बायली रो बाप, जद आ छव मईना री आपरी मा रै गर्भ मे ही, आपरै बाप रै जुलमां सू दुखी हुय'र इण संसार सू चल बस्यो। अर इण री अभागण मा आपरै धणी री मौत रै तीन मईना पछै बेलो जलम्यो। इण छोरी रै सागै इण रो एक भाई भी हुयो। दोनूं बैन-भाई नै इणां री मा पाख्या बारै गेर'र इण ससार सू चली बसी। पण म्हैं उण मरणआळी सूं अणजाणपणै मे ओ वादो कर लियो कै जे थारै छोरी हुई तो उण नै बचावण खातर म्हैं म्हारी ज्यान देय देवूली। अबै इण जिलफ नै लियोडी म्हैं भटकती-भटकती आप रै गाव री दिस कानी निकळ आई। अर भगवान म्हनै आप री सरण में भेजदी। अबै आप मारो का छोडो, आ आप री मरजी है।'

हमीदा री आख्यां में चौसरा आसू चाळणनै लाग्या। बा झारो-झार रोय रैयी ही। ठाकर उण री बात ध्यान सूं सुण रैयो हो। ठाकर रो हिवडो हमीदा री बातां अर रोवण सूं मोम दाईं पिघळ रैयो हो अर साळ मे बैठी ठकराणी हमीदा री बातां गौर सू सुण रैयी ही।

ठाकर हमीदा नै पूछ्यो, 'तो बो छोरो कठै है ? अर उण नै तूं सागै क्यूं नीं लाई ?'

हमीदा उथळो दियो, 'ठाकर सा, बो छोरो आपरै दादा-दादी कनै है।'

ठाकर अचरज सू पूछ्यो, 'तो इण रै दादा-दादी भी है काई ? पछै दादा-दादी इण छोरी नै क्यूं नीं राखी ?' -

अबै हमीदा आपरा आंसू पूंछ'र बोली, 'ठाकर सा, इण बच्ची रै घराणै मे लारली चार-पांच पीढ्यां सूं छोरी नै हुवतां ई गळो घोट'र का कीं देय'र मारणै री रीत चालती आई है। इण बार इण छोरी री दादी आपरै बेटै री आखिरी निसाणी मान'र इण रै दादै सू घणो ई गोधम करयो हो। पण म्हैं इण नै पाख्या बारै पडतां ई लुका'र इण रै जुलमी दादै नै, कीं बेरो नीं पडण दियो। बस, इण

रै बाद हुयोड़ै छोरै नै बता दियो तो वो जाण्यो कै उण रै पोतो ई हुयो है। अर म्हैं म्हारो वादो पूरो करण खातर इण छोरी नै लेय'र उठै सू निकळगी।' पछै हमीदा रोती-रोती बोली 'जे म्हैं उण पापी सू इण छोरी नै नीं बचावती तो म्हैं खुदा रै घर मे इण री मा नै काई मूढो दिखावती ? काई उथळो देवती..?' अर हमीदा पूठी ई रोवणनै लागगी।

ठाकर नै हमीदा री वातां मे सार लखायो। क्यूंकै वो आ जाणतो हो कै कई रजपूता रै घराणा माय ऐडी कुरीत्या हुया करै है। पछै उण नै आपरै बचपण मे खुद रै वडेरा कनै सू सुण्योडी एक बात याद आई कै उण रै गांव सू बौळो अळघो, उतराद मे, किणी ई गाव रै ठाकरा रै घराणै मे, छोरी नै हुवतां ई वाढणै री रीत है। पण उण बेळा उण नै ऐडी बाता माथै भरोसो नीं हो कै कठैई आपरी बेटी नै भी कोई काटै-बाढै है काई ? आज वो ऐडै ई घराणै री कुरीत रो फळ सांपडतै आपरै सामीं देख रैयो हो। पछै ठाकर खुद ई इण बात नै आप ताई हळकी करता थका सोच्यो, काई ठा आ छोरी उण ही ठौड री है का दूजी ठौड री ? पण हमीदा री बात मे साच लखावै है।

ठाकर बोल्यो, 'तो बो इतरो पापी है ? इतरो जुलमी है ? हत्यारो है. ? अर उण रो. सगळो गाव कीं नीं कर सकै है ? राम राम .।'

हमीदा बोली, 'ठाकर सा, उण रो घराणो तो नीं गाव नै कीं धारै अर नीं गांव खातर कीं सबूत छोडै।'

अबै ठाकर होकै री नळी नै अळघी कर'र बोल्यो, 'धिन है थारै मात-पिता नै अर धिन है थारी छाती नै, जिको तूं इतरै बडै जुलम माय सू इण छोरी नै लेय'र निकळगी । तू ओ घणो लूठो अर हिम्मत रो काम कर्‌यो है । पण तू कैवै है जिकी बात है तो बिलकुळ साची ? कठैई झूठ तो नीं है ? अर जे झूठी हुई तो ?'

हमीदा पूरै भरोसै सू बोली, 'ठाकर सा, म्हैं मुसळमान हू, जे आप रै गाव मे किणी मुसळमान रै घरै कुरान है तो मगाओ अर म्हारै सिर माथै राखद्‌यो। म्हैं जिकी बाता आप नै बताई है, उणा मे कीं झूठ नीं है।'

इतरै मे साळ मे बैठी ठकराणी बोली, 'ठाकर सा, इण रै सिर कुरान देवण री कीं दरकार नीं है। इण रै कैवणै मे साव सच्चाई है। म्है सूरज भगवान नै साखी राख'र कैवू हूँ कै लारली रात म्हनै एक डरावणो सुपनो आयो।' ठकराणी आपरो सुपनो अर उण टैम हुयी आपरी हालत बतावता थका कैयो, 'ठाकर सा काई ठा सावरियो इण छोरी नै बचावण खातर जे आपणै कनै भेजी है तो, कुण जाणै ?'

ठाकर आपरी ठकराणी अर हमीदा री सगळी बाता सुण'र कीं नीं बोल्यो। बो आपरै होकै नै हुडहुडावतो रैयो। उठीनै ठकराणी ठाकर रै उथळै अर निर्णय री उडीक मे चुपचाप बैठी ही। तो ठाकर रै सामीं बैठी हमीदा ठाकर रै फैसलै खातर टुकर-टुकर भूरी-तिस्सी गाय दायीं आख्या फाड्योडी देख रैयी ही। पण ठाकर गैरी सोच मे डूब्योडो अर दुनिया री दीठ सू कियां बच्यो जावैला, ऐडी उळझाड माय उळझयोडो होको हुडहुडावतो ई जाय रैयो हो।

इतरै मे ठकराणी कनै सूती छोरी 'फ्या फ्या' कर'र कूकी। छोरी रै कूकणै री आवाज ठाकर रै काना में जद पडी, तो ठाकर री गैरी सोच सूत रै काचै धागै दाई टूटगी अर ठाकर रै मूढै सू निकळ्यो 'ठकराणी सा, बाई नै बोबो देवो।'

ठाकर रो इतरो कैवणो हुयो, अर ठकराणी रै मन माय खुसी री फूलझड्या-सी छूटणनै लागी। बा अणकूत खुसी सूं फूली नीं समाई। उण नै लखायो कै बा आपरै ढोलियै सूं हेठै पडणआळी है। पण बा अपणैआप नै सभाळ'र झट उण छोरी नै आपरै हाथळा सूं लगाली। ठकराणी रै उण टैम री खुसी रो बखाण नीं कियो जाय सकै हो।

हमीदा, ठाकर री बात नै सुण'र थोडी ताळ ताई तो अपणैआप नै सभाळ ई नीं पाई। पछै बा आपरी सगळी पीड़ा, दरद अर अबखाया नै भूल'र जाणै हवा मे उड रैयी ही। बा एक अणकैयै सुख सू भरीजगी ही। उण नै लखायो, उण रो जमारो अर उण रो आगोतर सुधरग्यो है। बा आपरै मन माय आपरै पीरा-फकीरा नै मनावणनै लागी।

रावळै रै ऐडै छिणा मे ठाकर खखारो कर'र भारी आवाज मे बोल्यो, 'ठकराणी सा, म्हारो भगवान साखी है कै म्है भी बेटी खातर तरसतो हो। आपणै बेटी हुई। अर गई। पण बा गई नीं, आ बा ईज बेटी है जिकी आपणै हुई ही। आ आपाणी बेटी है . म्हनै लागै है कै ठाकुरजी महाराज म्हारी इण इच्छा नै पूरी करी है। म्हारै माथै उण रो घणो ओसाप है । अबै आप सू म्हारो ओ कैवणो है कै आप इण बच्ची नै आप री मनस्या सूं अगेजी है, इण नै हेजी है अर म्हारै कैया बिना ई आप म्हारी इच्छा पूरी करी है। इण खातर दुनिया री लूठी सू लूठी अबखाई रो सामनो करणो है। अबै दुनिया री कोई सगती इण नै अठै सूं नीं ले जाय सकैली।'

इण बिचाळै गाया-भैस्या रै काम नै निपटा'र धनजी भी उठै ई आयग्यो अर एकै कानी खड्यो बाता सुणनै लागग्यो। धनजी रै मन माय हरख नावड नीं रैयो हो। बो सोच्यो, जे ठाकर आपरी बैठक मे जावै तो म्हैं पूरै आंगणै मे उछळ-उछळ नाचू।

ठाकर आपरी बात नै आगै बधावता थकां रीस सूं बोल्यो, 'जे बो पापी, हत्यारो अठै ताईं पूगग्यो तो म्हैं उण रा टुकडा-टुकड़ा कर काढूंला। पण हमीदा, तू थोडी मजबूत रैयी । अर आज सूं तूं हमीदा नीं है . आज सूं तूं हीराबाई है । अर म्हारी बेटी रो नाव लाडो है . बाई लाडकंवर।'

ठाकर इतरो कैय'र आपरी बैठक कानी टुरग्यो अर धनजी उण रै लारै-लारै होको लियोडो बैठक मांय पूगग्यो।

ठाकर धनज़ी नै कैयो, देख धनजी थारै सूं म्हारै घर री कीं यात छानी कोनी है। अर तू थारै मा-बाप रै मरया पछै अठै, दरोगै दायीं नीं, घर रै टाबर दायीं पळ्यो है। अबै इण बायली री अर इण दाई री बात, का तो तूं जाणै है, का आ दाई खुद जाणै है। इण बात नै थां दोना रै अलावा किण नै ईज मालम नीं पडणी चाईजै। नीं तो म्हारै सू भूडो कोई नीं हुवैला।

'धनजी, ओ भेद, भेद ई रैवणो चाईजै। अबै आपा नै पूरै गांव सूं इण बात रै भेद नै कई दिना ताईं छिपा'र राखणै री घणी दरकार है। अर जे कोई हीराबाई रै बारै मे पूछै तो ओ ईज पडूतर देवणो है कै आ लुगाई ठकराणी सा रै पी'रै सू आयोडी है।' ठाकर थोडी ताळ ठैर'र बोल्यो, 'अबै दो-चार दिन ठकराणी सा कनै हथायां करणनै आवणआळी लुगायां नै ओ कैय'र मना कर देयी कै ठकराणी सा री आसग कोनी। बै अबार किण सूं ई नीं मिलणो चावै है। पछै इण दो-चार दिना माय म्है कोई उपाय सोचूं कै गाव-राव सामीं इण नै म्हारी बेटी कींकर बणाऊं ? पण तू थोडो सावचेत रैयी।' ठाकर री बात मे जठै गभीरता ही, बठै ई धनजी खातर अपणायत भी ही।

पण धनजी भी ठाकर रो वफादार माणस हो। बो आपरै हीयै तणो ठाकर रै सामीं हथेळी मे पाणी लेय'र सकळप कर्यो कै म्हारा प्राण जाय सकै है, पण ओ भेद म्हैं मरतै दम तायीं नीं खोलूला।

ठाकर उण नै प्यार री दीठ सूं देख'र बोल्यो, 'स्याबास धनजी, अबै तो म्हनै म्हारै मरणै रो भी कीं धोखो कोनी।' ठाकर उण री पीठ थपथपाई। अर आगै बोल्यो, 'धनजी अबै तू जाय'र उण बच्ची अर उण दाई हीराबाई रै खातर बढिया कपडा रो सरजाम कर। पण हां, पैली म्हारै खातर ताजा चिलमियां रो होको म्हनै देय'र जाई।'

धनजी हरख मे हरखायोडो, खुसी री छौळा चढ्योडो ठाकर खातर चाय अर ताजा चिलमिया रो होको पैला पुगावण री त्यारी मे लागग्यो। अर पछै बो उण दाई अर बच्ची रै गाभा रो सरजाम करणै री तेवडी। थोडी ताळ मे बो ठाकर कनै

चाय अर होको लेय'र गयो तो बो देख्यो ठाकर किणी गैरी सोच मे डूब्योडो चुपचाप बैठ्यो हो। धनजी होको अर चाय ठाकर कनै राख'र बेगो-बेगो रावळै माय आयग्यो।

धनजी रावळै मे बड्यो तो बो चितबगो-सो उभो रो उभो रैयग्यो। बो देख्यो, इतरी देर मे हमीदा सू हीराबाई घाघरै, ओढणै, कुडती, काचळी माय चूड्या पैरयोडी, टीका-टमका लगायोडी सुहागण-भागण-सी, राजपूतां रै घर री-सी, अर ऊभलांक मे ओपती लुगाई-सी आंगणै में खडी ही। बा धीरै-सी मुळक'र धनजी नै कैयो, 'आओ, बीरा सा।'

धनजी मन मे सोच्यो, इण रै बाथ्या घाल'र जिण भात बैन-भाई मिलै, उण भांत गळै मिलूं। उण नै लाग्यो कै आज जिन्दगी मे पैली बार उण नै कोई हीयैतणी बीरो सा कैयौ है। पण बो आप माथै काबू राख'र हीराबाई कानी हस दियो। अर बो बेगो-बेगो ठकराणी सा री साळ मांय गयो।

ठकराणी सा री साळ रो रूप ई बदळग्यो हो। बो देख्यो, बाई लाडकवर नूवें गाभां माय बढिया रलकियै माथै काजळ-टीकी करयोडी ठकराणी सा रै कनै सूती ही। धनजी ठकराणी सा नै हरख सूं बधाई दी।

ठकराणी सा आपरै लाम्बै केसा नै सुळझावती थकी धनजी सू बै ईज बाता कैयी जिकी ठाकर सा धनजी नै कैयी ही। धनजी भी आपरै उणी सकळप नै ठकराणी सा रै सामीं उथळ्यो। अर मन माय सोच्यो कै ठाकर अर ठकराणी रो मन एक है। इणां री बात एक है। इणा रो जोडो सिव-पारवती रो-सो है।

दस

ठाकर गैरै सोच मे डूब्योडो सोच रैयो हो कै आ बात गाव-राव सू कितरै'क दिना ताईं छिप्योडी रैसी ? छेकड गाव नै तो बेरो पडसी। पछै लोग मूढै माथै नीं तो परपूठ, जितरा मूंढा उतरी बाता करसी। अर धीरै-धीरै ऐडी बातां म्हारै मूढै सामीं आसी। पछै गाव मे इज्जत रा टक्का बटीजसी। अर जे म्है गाव रै भलै लोगा रै काना मे आ बात कैवूला तो लोग किसा बाता बणावणी छोड देवैला काईं ? पछै इण बच्ची रै साख-सम्बन्ध री टैम, म्हनै कीं अबखाई नीं आवैला काई ? हा, म्हैं अर म्हारी ठकराणी दोनूं इण नै म्हांरी बेटी मानली। अर सागै ई, इण दाई रै कैवणै सू बच्ची नै घर-घराणै री भी मानली। पण दूजा लोग इण बच्ची नै घर-घराणै री कियां मान लैवेला ? लोग कैवैला, ठाकर सुल्तानसिह इण छोरी नै नीं जाणै किण लालच रै कारण बेटी बणाई है ?

ठाकर विचारा रै ऐडै उळझवाड मे उळझयोडो, डाफाचूक होयोडो काईं करै, काई नीं करै री हालत मे। बो एक लाम्बो-सो सिसकारो न्हाख्यो। पछै सोच्यो, जे छोरी नै अर इण लुगाई नै अठै सूं काढ देवू, तो थोडी ताळ पैली रावळै मे जिकी बात हुई ही उण रो मोल काईं रैसी ? ठकराणी सा अर उण लुगाई सामै म्हारी जीभ, म्हारी बात धूड हुय जासी।

इतरै मे घनजी आयो। बोल्यो, 'ठाकर सा, आप नै मा सा रावळै मे पधारण री अरज करी है।'

ठाकर रावळै मे गयो। हमीदा हीराबाई रै रूप मे ठाकर नै झुक'र मुजरो करयो। ठाकर मुळक्यो।

ठाकर, ठकराणी री साळ आगै जाय'र ऊभग्यो। ठकराणी, ठाकर नै मुजरो करयो। ठाकर बोल्यो, 'फरमाओ सा।'

ठकराणी बोली, 'ठाकर सा, इण बच्ची नै लारली रात जद म्हैं अगेजी ही,

उणी वेळा सू म्हारै सामीं गाव-राव अर भाईपै री चिंता ही। अबै इण नै म्है म्हारो दूध देय दियो है। अर मन सू म्हारी बेटी मानली। अबै म्है किणी हालत मे इण बच्ची नै छोडूली नीं। पण जिको दुनिया सू नीं डरचो बो भगवान सू भी नीं डरचो। अबै आपा इण नै दुनिया रै सामीं कींकर लेय'र आवा ? म्हारो जीव कैवै है कै आप भी इणी चिंता मे घुळ रैया हुवोला ।'

ठाकर कैयो, 'आप रो कैवणो साव साचो है, ठकराणी सा। पण अबै इण उळझवाड सूं निस्तारो पावण रो काई उपाय है?'

ठकराणी आपरो सुझाव दियो, 'ठाकर सा, आप म्हनै अर हीराबाई नै म्हारै पीरै रै बहानै सूं, चार-छव मईना खातर, म्हारै भाई बनेसिह कनै, मुम्बई छोड आवो। पछै गांव-रांव अर कुटम्ब-कबीलै नै, आ कैय देवाला कै आ बच्ची म्हारै भाई री है। इण नै म्हैं गोद ली है। म्हनै बेटी री घणी चावना ही। गाव मे कोई बात फूटै, का चख-चख हुवै, उण सूं पैली आप म्हानै उठै पुगावण री त्यारी करद्यो। लारै सूं घर धनजी संभाळ लेसी। अर जे कोई पूछसी, तो कैय देसी कै ठकराणी सा री रात नै हालत घणी खराब हुयगी ही। इण खातर उणा नै रातो-रात, स्हैर री अस्पताळ मे ले जावणो पड्यो। इण रै बाद भी जे कोई बात बणसी तो म्हे कोई अन्याय तो कर्यो कोनी। म्हे तो एक मिनख रै अस नै पाळां हा। मिनख, मिनख रै अंस नै पाळै-पोखै, ओ मिनख रो घणो मोटो धरम है।'

ठाकर, ठकराणी री बातां नै गभीर हुय'र गौर सू सुण रैयो हो। अर उण रै घट मांय ठकराणी रो सुझाव उतरग्यो। बो चुपचाप खड्यो हो।

ठकराणी आपरी बात माथै जोर देय'र बोली, 'आप आज रात रा ई म्हारी अठै सूं जावणै री त्यारी करवाद्यो। आप म्हानै मुम्बई पुगा'र छव-सात दिना माय पूठा गांव पधार जाईज्यो।'

ठकराणी रै कैयै मुजब ठाकर सगळी त्यारी करावणै मे चुपचाप लागग्यो। ठाकर विचार कर्यो कै स्हैर सूं दीपचन्दजी सेठ री दुकान सू बनेसिह नै टेलीफून कर'र मुम्बई पूगणै रो समचार कर देवाला। अर बै टेसण माथै म्हानै लेवणनै सामनै आय जावैला। गोपाळ सू भी मिळ्यां नै घणा दिन हुयग्या। उण नै भी सभाळ लेस्यूं अर बनजी रो कारोबार कींकर चालै है, इण री जाणकारी भी हुय जावैली।

ठाकर, धनजी नै बुलायो अर सगळी बात सावळ-सावळ समझायदी। धनजी रो उथळो हो कै आप किणी बात री चिंता नीं कर्या।

रात घडी चारैक पछै ठाकर ठकराणी, हीराबाई अर उण बच्ची नै लेय'र गाव सू बहीर हुयो।

गढ सू निकळता ई मालियो ढोली मिलग्यो। यो सुभराज कर्‌यो अर आपरै गेलै लाग्यो। ठाकर, ठकराणी सू बोल्यो, 'ठकराणी सा, सुगन तो चोखा हुया है। मागळिक रो सामेळो हुयो है।'

पण गाव सू निकळता-निकळता नै रामूडो नाई मिलग्यो। रामूडो, ठाकरसा सू रामा-सामा कर्‌या। बो मन मे सोच्यौ कै इतरी रात गयां ठाकर, ठकराणी अर स्यात एक लुगाई और है, ऐ कठै जाय रैया है ? पण उण री पूछणै री हिम्मत नीं हुई।

ठाकर सा रो ऊठगाडो पांवडा पन्दरै-बीसेक आगै गयो हुवैला कै रामूडो ठैर'र देखणनै लाग्यो। चाणचकी उण रै कानां माय टाबर रै रोवणै री आवाज सुणाई पडी तो बो सोच्यो कै ठकराणी सा रै अबार टाबर हुयो हो, स्यात उण नै लेय'र स्हैर जाय रैया हुवैला। पछै उण नै चाणचकै चेतै आयौ कै ठाकर सा रै बायली हुई ही बा तो पूठी हुयगी ही नी ? फेर बो अपणैआप सू कैयो कै स्यात तनै टाबर रै रोवणै री आवाज रो बैम हुयग्यो हुवैला। अर बो आपरै घर कानी टुरग्यो। ठाकर रो गाडो बोहळी दूर जाय चुक्यो हो।

दिनूगै रावळै मे ढोल्यां, मेघवाळा नायका अर नाया रै घरां री लुगायां छाछ लैवण नै आई। उणा माय सू कीं ठकराणी रै बारै में पूछै ही। उण नै धनजी रो एक ई उथळो हो कै ठकराणी सा री हालत घणी खराब हुयगी ही। इण खातर उणा नै स्हैर री अस्पताळ लेयग्या है।

गढ री आ बात, डबडी जितरै'क गाव मे हवा रै ल्हरकै दायीं फैलगी। गांव रै लोगां नै चिंता हुई। कई जणा तो गढ मे धनजी नै पूछणनै भी आया। कई जणा कैयो ठाकर रो ऐडी अबखाई रै टैम गाव रै किणी मिनख नै बता'र नीं जावणो, माडी बात है। कई जणा कैयौ अबखाई बेसी बधगी हुवैला, इण खातर बेगा लेयग्या हुवैला। कई जणा बोल्या, कालै ताई समचार आय जावैला। पण रामूडो नाई चुपचाप हो अर बात आई-गई हुयगी।

ठाकर मुम्बई पूग्यो। टेसण माथै बनेसिह अर ठाकर रो बेटो गोपाळसिंह ऊभा हा। बै उणा नै लेय'र आपरै बगलै पूग्या। ठकराणी मुम्बई पैली बार आई ही। हीराबाई तो चमगूगी, चमकडफ्फू अर चितबंगी-सी हुयोडी फाट्योडी आख्यां सूं मुम्बई नै देखै ही। पण उण री समझ मे कीं नीं आय रैयो हो।

बनजी रै दो-तीन नौकर-नौकराणी। बढिया बगलो। बगलै रै आगै पोर्च मे, फियेट कार अर बढिया-सो बाग-बगीचो देख'र ठाकर-ठकराणी घणा ई राजी हुया। ठकराणी अर हीराबाई नै चाय-पाणी अर सिरावण करावणै सूं पैली बनजी

री नौकराणी उणा रै वास्तै सिनान-सपाडै रो सरजाम कर दियो।

इण बिचाळै ठाकर आपरै साळै बनेसिह नै उण रै ड्राईंग रूम मे अलघो लेय'र एकायन्त में सगळी विगत अर हकीकत बतावता थका कैयो, 'बनजी, आप री बैन रो मन हो। मनस्या ही। इण सू म्हैं भी राजी हो। पण ओ सगळो काम ठकराणी सा री मरजी मुजब हुयो है। अबै आप इण नै आप री भाणजी मानोला। आप री बैन अर हीराबाई, अबै आप रै अठै तीन-चार मईना रैवैला अर पछै आप इणां नै टाटिया री मंडी ताईं पुगाय दिया। म्हैं इणा नै उठै सू गाव लेय जावूला। इण बिचाळै म्है गांव-राव री अर म्हारै कुटम्ब-कबीलै री हलगत री भी कीं जाण-चीण लेय लेवूंला।'

बनजी एकला ई मुम्बई में शेयर रो धधो करै। अर बाकी उणा रा छव भाई आपरै गांव मे खेती-बाडी करै अर धन-धीणो राखै। ठकराणी, इण सात भाया री एक सोनल बाई। इण माथै सगळै भायां रो मोकळो ई हेत अर बाई नै घणी चावै। बाई रै खातर आपरा प्राण देवण नै भी त्यार।

बनजी सगळी बातां सुण'र बोल्यो 'जीजो सा, आप भी भली भोळावण देवणनै लाग्या। म्हा सात भाया बिचाळै म्हांरी एक सोनल बाई है। इण सारू म्हांरा प्राण भी त्यार है। पछै, आप दोनूं तो इतरो बडो काम कर्यो है, जिण री दुनिया मे बातां चालसी। फेर आप नै ओ पूरो भरोसो भी है कै ओ राजपूत रो खून है। अर जे राजपूत रो खून नीं भी हुवै, तो ओ मिनख रो तो खून है, जिण नै आप अंगेज्यो है।

'अब तक तो ऐडी बातां नानी, दादी कनै सू कहाण्यां रै रूप में सुणता आया हां। पण आज सैंमुख म्हारै ई घर मे म्हानै देखणनै मिळी है।

'जे आ लडकी काल-कदास नै बडी हुयगी अर इण रै माईता नै किणी भात ओ बेरो पडग्यो कै आ बा ई छोरी है तो उणां माथै, अर उणा जैडै लोगा माथै एक सातरो थप्पड हुवैला, जिका बेटी रै जलम माथै खोटो अंकुस राखै। जिका बेटी नै कुवारी थकां परायो धन समझ'र अणकूत खोरसो करावै। अर परणीज्या पछै सासरलां री गुलामी भोगणनै सूंप देवै। इण भात रा लोग आपणै समाज, आपणै गावा अर आपणै देस मे अजू ताई घणा ई है। अठीनै महानगरा नै देखो, जठै पढी लिखी लडक्या है। उणां नै हर तरा री छूट है। आजादी है।'

इतरै मे ठाकर मुळक'र बोल्यो, 'बनजी ऐडी छूट अर ऐडी आजादी किण काम री, जिण सूं लुगाई जात री सील अर मरजादा, लाज अर सरम, इज्जत अर आबरू, आधी उघाडी, आधी ढक्योडी रैवै। रिस्ता-नाता अर ऊमर, सगळा नै ताक

माथै राज'र लुगाई नै कोरी भोग री चीज मानणनै लाग जावै। कदैई उण री मजबूरी सू तो कदैई मरद आपरै जोर सू उण सू, चावै जिको काम लेय लेवै। अर मरद हाड्या माथै मास देख'र, रग्योड़ा गाभा देख'र उण नै भूखै गंडक दार्यी चचेड़णनै लाग जावै। आपणै घरां माय ऐडी बातां नीं चालै सा ।'

ऐ दोनू साळो-बैनोई अठीनै ऐडी बाता मे लाग्योड़ा हा, तो उठीनै ठकराणी सू ठकराणी रो बेटो गोपाळसिह बाता कर रैयो हो।

'मा सा, म्हनै जद ओ समचार मिळ्यो कै म्हारै बैन हुई है तो म्है घणो ई राजी हुयो। अर सोच्यो कै म्हैं भी म्हारी बैन नै, अठै ई म्हारै सागै पढाऊंला। क्यूकै जद म्हैं दूजै लडका रै सागै उणा री छोटी-छोटी बैनां नै देखतो तो म्हारो जीव भी घणो ई चालतो कै म्हारै भी बैन हुवै तो किसो'क आछो रैवै। पछै, म्हनै ठा पड्यो कै म्हारी बैन मरगी। मा सा, म्है दो-तीन दिना ताई रोटी नीं खाई अर म्हैं रोय-रोय'र म्हारा बुरा हाल कर लिया। फेर मामो सा म्हनै बुरी तरिया सूं धमकायो अर रोटी खवाई।' इतरो कैय'र गोपाळ उण छोरी नै आपरै हाथा मे लेय'र उण रा लाड करणनै लाग्यो।

गोपाळ री ऐडी बाता सुण'र ठकराणी री आंख्या पाणी सूं भरीजगी। गोपाळ रो ठकराणी अणकूंत लाड करता थका उण रै गाला माथै हाथ फेर'र बोली, 'हा बेटा, बैन रै बारै मे ऐडी बाता सुण'र जे तनै दुख नीं हुवतो तो किण नै हुवतो ? पण बेटा, बात आ ही कै आपणी आ बाई इतरी बीमार हुयगी ही कै पूरै गाव में बाई सा मरग्या, बाईसा मरग्या री बात फैलगी ही। पछै हीराबाई, जिका ऐ म्हारै सागै आया है, ऐ कोई ऐडो झाडो-झपटो दियो कै आपणा बाई सा पूठा आयग्या।'

'तो, मा सा, झाडै-झपटै सू मरयोडो आदमी पूठो जी जावै है काई ?' गोपाळ रो ऐडो भोळो सवाल ठकराणी नै ठेठ ताई झझोड़ग्यो।

ठकराणी मन मे पछताई कै गोपाळ नै झाडै-झपटै री बात कैय'र माड़ो काम कर्यो है। अर बा आपरी बात नै फोरी, 'नीं बेटा, झाडा-झपटा सू मरयोडो आदमी नीं जीवै। अर नीं इण सू कीं हुवै। म्हारो मतलब ओ है कै आपाणी बाई मरया कोनी हा। कीं ताळ सातर मूर्छित हुयग्या हा। पछै हीरावाई इण नै उथळ-पुथळ कर'र इण मांय प्राण पूठा बपराय दिया।' ठकराणी री, आ बात गोपाळ रै गळै उतरगी। पण ठकराणी रो जीव उथळ-पुथळ हुवणनै लाग्यो कै इण भोळै-भाळै टाबर नै जे सगळी बात साच बता देऊली, तो नीं जाणै इण रै काचै हिवडै माथै काई बुरो असर पडैला ? अबै ठकराणी, गोपाळ नै इण छोरी रै बारै मे कदैई कीं नीं बतावणै री मन माय पक्की धार ली।

गोपाळ बाई रा लाड करतो-करतो पूछ्यो, 'मा सा अबै तो आप इण नै म्हारै सागै ई पढावोला नी ?'

ठकराणी उथळो दियो, 'हा बेटा, बाई थोडी-सी वडी हुया पछै आप दोनूं बैन-भाई अठै ईज पढोला।'

इतरै मे हीराबाई न्हाय-धोय'र ठकराणी अर गोपाळ कनै आई। ठकराणी गोपाळ नै बतायो, 'गोपाळ ऐ हीराबाई है। ऐ थारै नानेरै री है। बडी स्याणी अर हिम्मतआळी लुगाई है। अबै ऐ म्हारै सागै रैवैला अर थारी बैन री सार-सभाळ करैला।'

गोपाळ हीराबाई नै पावाधोक कैयो। हीराबाई गोपाळ रो लाड करयो अर आसीस दीवी। इण टैम ई ठाकर अर बनेसिह भी उठै ई आयग्या। बनेसिह आपरी भाणजी नै गोद्यां माय लेय'र लाड करणनै लाग्यो। गोपाळ बिचाळै ई बोल्यो, 'मामा सा, ऐ हीराबाई तो आप रै गाव रा ई है।'

बनेसिह हीराबाई नै कीं पूछणआळो ई हो। पण ठाकर, बनेसिह कानी ऑख मार दी। बनेसिह उणा रै इसारै नै समझग्यो।

नौकर आयो अर सगळा नै चाय-पाणी अर नास्तै रो कैयो, 'साब, नास्तो त्यार है। सगळा नास्तो-पाणी करयो। पछै जीम-जूठ'र दुपारी मे सगळा नै बनजी आपरी कार में घुमावणनै लेयग्यो। आवती बेळा बनजी दो हजार-पन्दरैसौ रा रमतिया, हींडो अर गाभा-लत्ता मोल लेय'र आयो।

दो-तीन दिना ताईं ठाकर मुम्बई मे रैयो। पछै, सगळा नै मुम्बई छोड'र आप आपरै गांव कानी बहीर हुयग्यो। पण उण सूं पैली जद ठाकर बनेसिह सूं कारोबार री बात-चीत कर रैयो हो, उण टैम बनेसिह, ठाकर नै कैयो, 'जीजो सा, अबै ऊंठगाडा रो टैम गयो, अबै आप खातर म्है एक-दो बरस मे एक बढिया-सी जीप भेजूं हूँ। इण सूं ठिकाणै री स्यान बधसी अर आप रो लोगा मे रुतबो रैसी।'

ग्यारह

आठ दिना सूं ठाकर आपरै गाव में पूठो आयो। धनजी नै गांव-रांव रा हालचाल पूछ्या। धनजी बतायो, 'गांव मे किणी तरै री कीं बातचीत कोनी। हा, गाव रै लोगां नै मा सा रै बारै में घणी चिता हुई ही।' धनजी री बात सुण'र ठाकर रो जीव जम्यो।

ठाकर नै गांव मे आयो सुण'र लोग-बाग ठाकर नै समाचार पूछण खातर गढ मे आवणनै लाग्या। ठाकर लोगां नै उथळो देवतो कै 'ठकराणी सा री स्हैर रै अस्पताळ में पार नीं पडी तो उठै रै डाक्टरां रै कैवणै सू, ठकराणी सा नै मुम्बई लेय'र जावणो पड्यो। मुम्बई में ठकराणी सा रा भाई, बनेसिह रैवै है। अर उठै ई आपणो गोपाळसिह पढै है। सो ठकराणी सा नै ईलाज सारू चार-छव मईना लागसी। ईलाज सारू उठै ई छोड आयो।' अबै चार-छव मईनां री बात सुण'र गांव रै लोगा मे चिता हुई कै ठकराणी नै स्यात कीं घणी अबखाई है !

अबै ठाकर रो जीव बिलमावण खातर, गाव रा दो-चार आदमी रोज गढ माय हथाया करणनै आवण लाग्या। गढ री मोटोडी तिबारी री चौकी माथै रोज ढोलिया ढाळीजै। तम्बाखू रो भर्योडो गट्टो राखीजै। चिलमां, होका पीवीजै अर आपस मे मोकळी गप-सप हुवै।

गाव रो सेठ दुलीचन्द गांव में ई रैवै। उण रो बिणज-ब्यौपार अठै रै स्हैरां माय अर कळकत्तै-असम कानी भी है। उण रा टाबर धन्धै नै सभाळै। सेठ दुलीचन्द दानी, धीरै अर स्याणै मिनखां री गिणती माय गिणीजै। सेठ दुलीचन्द गाव रै गरीब-गुरबा नै निकमाळै री टैम सायरो देवै। खेती करावै। आपरै व्यवहार, बातचीत अर लेण-देण सूं गाव रै लोगां माय देवता दाई पूजीजै।

गाव मे एक-दो बार जद काळ पड्यो, तो सेठ दुलीचन्द गाया, भैंस्या अर दूजै पसुधन खातर घास, चारै, पाणी रो सरजाम कर्यो हो। बो मीठै पाणी रो कूओ

भी खुदवा दियो। स्कूल खातर छोटो-सो भवन बणवाय दियो जठै पाचवीं ताई री पढाई हुवै। इण बार सेठ स्कूल रो आठवीं ताई रो भवन बणावण री अर अबै गाव में एक छोटी-मोटी डिस्पेंसरी रो भवन बणावण री मन माय तेवड राखी ही।

सेठ दुलीचन्द रा ऐडा दान-पुन रा काम लोगा रै मन माय ऐडी भावना नै बणाय राखी ही कै बाणियो लोगा रो खून चूसणआळो ई नीं हुवै है, बो लोगा नै औडी रै बगत सायरो पूगावणआळो अर लोगा नै बणावणै मे उण रो घणो लूठो हाथ हुवै है। गाव मे इण गुणा सू पूजीजतो सेठ दुलीचन्द आपरै गाव रै ठाकर सुल्तानसिंह रो खास भगत अर ठाकर री इज्जत सगळा सू बेसी करै। ठाकर भी उण रो मान-सनमान, आव-आदर इधको करै।

सेठ दुलीचन्द अर ठाकर रै एक हुवणै रै लारै, घणो मोटो कारण ओ हो कै सेठ रै बाप नै ठाकर रो बाप इण गाव मे ल्यायो हो अर उण री हरेक बात सू मदद करी ही। इण गाव मे आया पछै सेठ दुलीचन्द रै बाप रा दिन ऐडा फिरया कै सेठ रै घरै लिछमी औड दिया पूठी आवणनै लागी।

अबै इण अबखाई री बेळा माय सेठ ठाकर कनै बैठ्यो दिन-दिन भर गप-सप मारै।

ठाकर अर गाव रै लोगां बिचाळै हथाया तो पैली भी हुवती ही, पण आजकाळै ठाकर आपरी बातचीत मे बेटी रै घर माय हुवणै माथै कोई न कोई बात लोगा रै सामीं रोज करणनै लागग्यो।

एक दिन ठाकर अर सेठ दुलीचन्द अर गाव रा चार-पाच ठावा-चावा लोग गढ मे बैठ्या हा। उणां रै बिचाळै बातचीत चाली कै घर मांय बेटी हुवणी चाईजै। सेठ कैयो, 'ठाकरा, आपणै सास्त्रा माय अर दुनिया रै सगळै धरमां मांय, बेटी री महिमा, बेटी रो मान अर बेटी री माया नै घणी मोटी मानी है। पण आजकाळै आपणै अठै बेटी रो हुवणो एक पाप हुवतो जाय रैयो है। क्यूकै दायजै री भोभर इण भात फैलगी है, जिकी मे बेटी रै माईता रा पग किणी न किणी भात सूं बळ्या ई सरै है। इण कारण तो आज बेटया कठैई जैर खाय'र मरै है तो कठैई बै बळीतै रै भेळी बळै है।'

सेठ आपरी वात नै आंगै बधावता थकां कैयो, 'ठाकर सा, पैली तो राजपूता माय टीको देवण री रीत हुया करती ही। जितरो बडो ठिकाणो हुवतो उतरो ई बडो टीको हुया करतो हो। उतरो ई उण रो मान-सनमान हुया करतो हो। अैडी रीत आप लोगा माय ई चाल्योडी ही। पण आजकाळै आ टीकै री रीत जात-जात में चाल पडी। जिकै सू इण रीत रो ऐडो हाल हुयो है कै भलाई छोरो तीन कोडी रो भी

नीं हुवै. पण उण रै माईता नै टीको भावै है। पछै बेटी रो बाप, बापडो काई करै ? क्यूकै बेटी नै बो ऊमर भर आपरै घरै तो राख कोनी सकै ? उण नै तो आपरा सौ मरणा मर'र, टीकै रो सरजाम करणो ई पडै। दूजी बात आ है कै आज रै छोरा सू कमाई-कजाई तो हुवै कोनी, पछै बै टींगर अर उणा रा माईत, बीनणी रै पी'रै सू धन चावै। जे बीनणी रै माईतां कनै कीं नीं हुवै तो सासरला, का तो उण नै बाळ'र, का उण नै मैणा सू अधमरी कर'र आपरै काळजै री भोभर नै बुझावै।'

ठाकर रै सेठ री बातां गळै उतर रैयी ही। वो मन मांय सोच रैयो हो कै म्है तो कई पीढ्या सू ई इण रो सुवाद नीं चाख्यो है। पण अबकै उछाळभाठो सिर माथै लियो है। जिको देखां हा, कांई हुवै अर कांई नीं हुवै ?

ठाकर बोल्यो, 'सेठा, आप रो कैवणो तो साव साचो है। पण अबै इण रो कोई सातरो उपाय कठै मिळै ?'

रैवतो चौधरी बोल्यो, 'ठाकरां, आप नै इण रो उपाय ढूढणै री कांई दरकार ? आप रो तो इण जैर सूं पीढ्या ताई लारो छूट्योडो है। पण भला मिनख दूसरां री अबखाई नै आपरी अबखाई मान'र ऐडी चिंता कर्‌या करै है।'

इतरै मे रामूडो नाई उठै आयग्यो। रामा-सामा कर्‌या अर बैठग्यो।

ठाकर, रैंवतै री बात रो उथळो देवतो बोल्यो, 'चौधरीजी, आपरै नाक री माखी तो सगळा ई उडावै है। पण आजकाळै दायजैआळी सरपणी तो ठौड-ठौड बटका बोढणनै लागगी। पछै म्हारी ठकराणी तो अबकै म्हारै साळै री बेटी नै, बेटी दायीं बडी कर'र ब्याहणै री धार-विचार राखी है। क्यूंकै उण नै बेटी री चावना घणी है। हा, कीं थोडी-घणी म्हारै मन मांय भी बेटी री चावना बणी रैवै है।'

रामूडो बैठ्यो बाता सुण रैयो हो। बो एक बार तो उचक्यो कै बो पूछै कै ठाकरा, आप जिण दिन सैर जाय रैया हा, उण दिन, उण नै किणी छोटै टाबर रै कूकणै री आवाज सुणाई पडी ही, बा टाबर री आवाज आप रै गाडै माय कींकर ही ? पण उण री हिम्मत नीं हुई अर बो चुपचाप ई बैठ्यो रैयो।

इण भात री बातां ठाकर रै गढ माय रोज हुवती। अर जोग-सजोग सूं रामूडो नाई उठै उण दिन आय ज्यावतो, जिण दिन ऐडी बाता हुवती ही। रामूडै रै, बार-बार ठाकर नै, गाडै मांय रोवतै टाबर रै बारै मे पूछण री मन मे आवती, पण नीं जाणै उण सूं क्यूं नीं पूछीजतो हो ?

ऐडी बाता-चीता माय चार-छव मईना बीतग्या। पण ठाकर, का धनजी रै

सामीं उण दाई रो, का उण छोरी रो कीं जिकर कदैई नीं आयो। अबै ठाकर नै पुख्ता भरोसो होयग्यो कै तरकीब पार पडगी।

ठकराणी, हीराबाई अर बाई लाडकवर छव मईना सू पूठा आपरै गाव मे आया। गाव री लुगाया ठकराणी सूं मिलणनै आई। ठकराणी री गोद्या माय फूला रो-सो भारो, गुलाब री पत्ती रो-सो गोरो निछोर रग अर चाद रै टुकडै दायीं रूप री निधान, छव मईना री उण छोरी नै ठकराणी रो बोबो चूघता देख'र लुगाया चितबग्या-सी हुयोडी आपस में बाता-चीतां करणनै लागी।

लुगायां मे ऐडी बातां भी हुय रैयी ही कै ठकराणी तो खुद ई रग-रूप अर गाभा-लतां सूं घणी फूठरी हुय'र आई है। अर इण रै सागैआळी लुगाई स्यात कोई बारै सू आयोडी लागै है। पण ठकराणी रै हांचळा सू लाग्योडी आ छोरी ठकराणी रै कनै किण री है ? ऐडी बाता जद ठकराणी रै काना लाई पूगी, तो बा उणा नै बतायो कै 'हीराबाई म्हारै पी'रै सूं आयोडा है। अर म्हारी गोद्या री छोरी म्हारै भाई री बेटी है, जिण रै बेलै री छोरया हुई ही। उणा माय सू एक नै म्हे पाळण अर म्हारी बेटी बणावण नै लेयली।'

पण गांव-रांव रै लोगां मांय ठाकर री बेटी एक आडी (पहेली) बणगी। लोगां माय ऐडी गुण-तुण हुवती कै ठाकर री इण छोरी रै बारै मे तो दाळ मे कीं काळो है। अर टैम-बेटैम ऐडी बातां हुवती रैवती।

एक दिन हीराबाई अर धनजी किणी काम सूं, सेठ दुलीचन्दजी री हवेली जाय रैया हा। उणां नै गेलै मे बो आदमी मिळ्यो, जिको हमीदा नै ठाकर रो गढ बतायो हो। उण री निजर जद चाणचकी हमीदा कानी गई तो उण नै लखायो कै बो इण लुगाई नै कठैई देखी है। पछै उण नै याद आई कै आ लुगाई तो स्यात बा ईज है जिकी आज सू चार-छव मईना पैली ठाकर रो गढ पूछ्यो हो अर तू इण नै बतायो हो। पण उण लुगाई रै तो सूथण पैरयोडी ही। अर बा तो स्यात कोई मुसळमानणी-सी लागै ही। उण रै कनै तो स्यात कोई टाबर भी हुवतो हो। पछै, बो सोच्यो कै स्यात उण लुगाई सू इण रो नाक-नक्सो मिळतो हुवैला। फेर बो सोच्यो कै कदै ई धनजी नै इण बाबत पूछस्यां।

ऐडी बातां मांय दिन, मईना अर बरस बीतणनै लाग्या। अठीनै लाडकंवर दूज रै चाँद दायीं दिन-दूणी, रात चौगणी वधणनै लागी।

बारह

उठीनै होदा गाव मे बरस दो-चारैक तो गांव रै लोगां माय हमीदा दाई नै ढूढ'र ल्यावण री चर्चा चाली अर चेस्टा भी करीजी। पण धीरै-धीरै लोग-बाग इण बात नै भूलण नै लागग्या। पण आ बात छोगजी अर लालजी रै बिचाळै काठी झालीज्योडी ही कै उणा नै हमीदा रो बेरो करणो है। बै इण बात नै आपरै मनां माय ईज राखी।

होदा माय लारलै तीन-चार बरसा सू काळ पड रैयो हो। कदैई बायोडै खेतां नै, खेता री रेत बिना पाणी डकार जावती ही तो कदैई हरै-भरै खेतां नै टीडी-फाको चाट ज्यावतो हो। ऐडै काळा सूं मारयोडा गाव रा लोग, गाव छोडण नै त्यार हुय जावता तो छोगजी अर लालजी उणां खातर राज सू, सेठ-साहूकारां सूं मदद दिरावता थका उणां नै गांव में ई रोकण री चेस्टा करता हा।

अबकै होदा री रोही मे राम रमणनै लाग रैयो हो। लोग-बाग आपरै खेतां नै देख'र लारलै काळा नै भूलण री हालत में आयग्या हा। जीवणजी रो पोतो राजूसिह बारह-तेरह बरसां रो हुय रैयो हो। राखी रो तिवार हो। बैनां आप-आपरै भायां रै राखी बांधै ही। अबै राजू कीं समझदार हुयग्यो हो। उण रै मन मे आई कै बो आपरै पडौस री छोरी केसर कनै सू राखी बंधावै। अर बो राखी बधा'र जिण बेळा आपरी कोटडी मे गयो तो जीवणजी री निजर उण रै हाथा माथै पडी। जीवणजी काठो रीस मे भरीजग्यो। अर बो आपरै पोतै नै लकडी, जूता अर थापां-मुक्कां सू कूट-कूटर उण रो मछी-मांस कर दियो। राजू आपरै दादो सा री इण मार रो मतलब नीं समझ्यो। बस, बो तो ठैर-ठैर'र आ ईज सोच रैयो हो कै जिको दादो सा उण रै सांस माथै, आपरा प्राण देवै, बो ईज दादो सा हया-दया बिना उण नै इतरो जोर सू क्यू मारयो है ? राजू रै रोवणै मे एक अणकैयो दरद लखावै हो। वो सुबक्या चढ्योडो, डुसक्या भरतो, आपरी दादी पाना कनै गयो। दादी पाना

आपरै पोतै री ऐडी दसा देख'र उण नै पूछ्यो 'अरे राजू, काई बात है ? बात तो बता ? तनै कुण मार्‌यो बेटा ?' पाना चिंता मे भरीज्योडी राजू नै बार-बार पूछ रैयी ही। पण राजू रा आंसू थम नीं रैया हा। पछै पाना उण नै आपरी छाती सू चिपा'र बार-बार लाड करणनै लागी।

पण राजू री सिसक्या तो राजू री छाती मे नावडै ई कोनी ही। पछै वो डुसक्या भरतो-भरतो बोल्यो, 'म्हनै जी सा मार्‌यो, कै तू आ राखी हाथ रै किण सू बंधाई अर क्यू बधाई ? म्हारै हाथ सू राखी नै तोड'र जी सा आपरै पगा सू मसळ काढी। अर जी सा कैयो जे भळै कदैई ऊमर मे भी, किणी सू राखी बधवाई तो थारी ज्यान लेय लेवूला।' इत्तरो कैय'र राजू पूठो ई डुसक्या भर-भर रोवणनै लाग्यो।

पाना उण रो अबकै बेसी लाड करयो अर उण नै बुचकार्‌यो। पछै कैयो, 'म्हारै राजकुमार रै म्है राखी बाधूली।' पाना उण नै भुळावती थकी आगै कैयो, 'म्हारै चाद रै टुकडै खातर म्है स्हैर सू फूठरी-सी राखी मगा'र राखी बाधूली।'

राजू आपरी दादी पाना सू सवाल करणनै लाग्यो, 'मा सा, केसर बाई सू राखी बंधवाय'र म्हैं आछो काम नीं करयो काई ? जद म्हारै बैन नीं है तो म्हैं उण सूं राखी बधवायली इण मे बुरी बात काई है ?'

भोळै राजू रो ओ सवाल पाना नै ठेठ ताईं झकझोरग्यो। पाना सोच्यो, अबै राजू नै काई उथळो देवूं ? पछै, इण नै जे सगळी बात बताय देवूली, तो नीं जाणै इण माथै, काई असर हुवैला ? पाना बात नै गिटणै री चेस्टा करी। पण राजू रो हठ तो बालहठ हो। छेकड पाना नै राजू रै सामीं झुकणो ईज पड्यो अर उण नै आपरै घराणै री रीतिनीति री विगत बतावणी पडी-'बेटा, थारै सागै जलम्योडी, थारी एक बैन ही, जिकी नै हमीदा दाई थारै जी सा रै डर सूं लेय'र अठै सू कठैई निकळी ही। जिकी अजू ताई पूठी नीं बावडी है। स्यात वै दोनू कठैई मर-खपगी हुवैला ! थारै दादै नै इण बात रो ठा नीं हैं। कै दाई हमीदा अठै सू इण घराणै री छोरी नै जीवती लेय'र न्हाठगी है। थारो दादो, उण दाई नै घणी ई दूढी। पण उण री पार नीं पडी।' पाना आपबीती अर आपरै घराणै री विगत बताती-बताती गळगळी हुयगी अर आपरी गीली आख्यां नै पूछणनै लागी।

भोळै-भाळै राजू नै आपरै घराणै री विगत अर रीति-नीति रो ज्द थेरो लाग्यो, तो वो भाठै दाईं होयग्यो। बो सूनो हुयोडो आपरै जीवणै पग रै पजै माथै, जलम सू थप्पोडै, पान रै पत्तै जैडै, लसणियै नै मसळतो-मसळतो कद सोयग्यो, उण नै कीं ठा नीं पडी। पाना आपरै काम मे लागगी।

राजू नै सूत्यै-सूत्यै नै सुपनो आयो कै उण ज्तिरी, उण जैडी सकल री एक

छोरी उण रै राखी बाधणो चावै है। पण बो दादै री मार रै डर सूं उण सू राखी नीं वधवा रैयो है। बो चमकै अर चमकणै सू उण री नींद टूट जावै।

पछै बो आपरी दादी नै सुपनो सुणावतां थका पूछ्यो कै, 'मा सा, आ छोरी कठैई म्हारी बैन तो नीं है ? जिकी स्यात कठै ई जीवती हुवैला। अर उण रो मन म्हारै राखी बाधणो चावै है ?'

पाना उण रो सुपनो सुण'र कैयो, 'बेटा, ऐड़ै नींद रै जजाळां माथै भरोसो नी करणो चईजै, पछै बा दाई अर थारी बैन जे कठैई जीवती हुवती, तो उणां नै सगळो गाव तीन-चार वरसा ताईं घणो ई ढूढ्यो अर वै कठैई नीं लाधी। छोगजी अर थारा दादोसा तो उणा नै ढूढण खातर रात-दिन एक कर दिया हा। नीं जाणै बा दाई उण छोरी नै लेय'र किण बिल माय जाय'र बडगी ही कै उण रो कीं ठा ई नीं पड्यो। छेकड सगळा आ सोच'र ठडा हुयग्या कै बा कठैई मरगी हुवैला अर उण रा हाड-मास गिरझडा का गडकडा खायग्या हुवैला।'

पण राजू रो मन, पाना री इण बात नै नीं मान रैयो हो। अबै बो रोज आपरी दादी, पाना नै कैवै कै 'नीं दादी, म्हारी बैन तो कठैई जीवै है। अर म्हैं उण रो वेरो करूला ।'

एक दिन जीवणजी, इण दादी-पोतै री ऐडी बातां लुक'र छानै सूं सुणली। दादी-पोतै नै रोज आ ईज कैवती कै नीं बेटा बै कठैई मर-खपगी। अर पोतो कैवतो, नीं मा सा, बै कठैई जीवै है ।

जीवणजी जद उण दोनू दादी-पोतै री ऐडी बाता सुणी तो उण नै लखायो, जाणै उण री एडी सू चोटी ताई कोई लापो लगा दियो है। अर बो धू-धू कर'र जीवतो ई बळ रैयो है।

एक दिन राजू खेत गयोडो हो। जीवणजी मौको देख'र पाना कनै आयो अर पूछ्यो 'अरे, खसमरोवणी राड, तू इतरो वडो जुलम कर'र माखी दायीं मसळ'र भाठै दायीं गिटगी । अरे राड, आ तो पक्की बात है कै बै दोनू अबै ताई कठैई मर-खपगी हुवैला। अर जे वै कठैई जीवती हुवती तो म्हैं उणां नै बिल माय सूं काढ ल्यावतो पण तू म्हनै क्यू नीं बतायो ? धिरकार है थारै घराणै नै अर धूड है थारै माईतां रै माजनै मे, जिको तनै म्हारै लारै लगाई अर तू रांड बुढापै मे म्हारै घर री ऐन नै तोड दी। जे बा छोरी कठैई जीवती हुवैला तो राड म्हारी तो सात पीढ्या ई डूब जावैली अर म्है तो जीवतो ई मरग्यो . ।' जीवणजी पछतावै मे गीलै छाणै दायीं धुखणनै लाग्यो।

पाना जीवणजी नै कैयो, 'जे आप नै ओ पक्को भरोसो है कै वै कठैई मरगी

हुवैला तो अबै, चुप कर'र बैठणै मे ई सार है। अर जे आप राजू नै इण बारै मे तग करयो तो ओ तूलडो भी हाथ सू निकळ जावैला अर आपा ई नीं, आ धरती रैवैली उण टैम ताई आपणा मसाण धुखैला।'

पाना री इण धमकी सू जीवणजी डरग्यो। क्यूकै बो राजू री मास-मास माथै आपरा प्राण निछावर करतो हो। उण नै राजू मे आपरो बस अर नावणो दीसै हो। अर बो राजू नै उण दिन पछै कीं नीं कैयो।

इण भात दिन, मईना अर बरस बीतणनै लाग्या। पण राजू रै मन माय एक ई बात लाग्योडी ही कै म्हारी बैन जीवै है उण नै ढूढू तो कठै ढूढू ?

तेरह

अठीनै नैणाऊ गाव मे सावणियै री तीज रो तिवार हो। मखमल दार्यी कवळी, हरी हरी घास, खुली अर खाली ठौडा माथै पसरयोडी ही। खेतां मे हरियाळी ही। दो-दो ढाई-ढाई बिलात उग्योडो काचो-करस धान हो। गाव अर रोही रै रूखा माथै छायोडी हरियाळी, लोगा रै मना मांय एक अणूतो हरख जगावै ही। अर उणा रै मन नै लुभा-लुभा'र जावै ही।

गाव रै गौरवै, जठै गोगोजी, भैरूजी, भोमियोजी, रामदेवजी जैडै देवतावा रा खेजड्या रै नीचै, छोटै-छोटै कच्चै चबूतरा माथै, कच्ची ईटा रा छोटा-छोटा थान बण्योडा हा, उणा सू कीं अळघा पण निरवाळी ठौड माथै नीम रै एक जूनै पेड रै डाळै सू, बाई लाडकवर खातर, ठाकर कानी सू हींडो लगायोडो हो।

उण दिन मनमौवणो समो हो। आभै मे सावण रै बादळां रा लोर आवै हा अर जावै हा। झीणै-झीणै बायरियै रै सागै ऐडा बादळ, आपरी फुवारां सू, हींडो हींडती छोरया सागै जाणै अचपळायां कर रैया हा।

सुरग सू उतरयोडी परी-सी, रूप री निधान, गुणा री कुज, रग री राजा, नाक नक्स री बणगत नै बेमाता जाणै बैलै बगत मे बैठ'र घड़ी हुवै अर गुलाब रै फूल दार्यी दीखण मे कवळी, बाई लाडकवर आपरो सोळवो सावण पूरो कर चुकी ही। बा आपरी सहेल्या रै सागै हींडो हींड रैयी ही। हींडो हींडती छोरया कदैई आपस मे खिल-खिल हंसै ही तो, कदैई बै एक-दूजी रै गिलगिल्या करै ही।

ऐडै मौकै माथै पडौसी गांव रै ठाकर रो बेटो विजयसिह, छडछडीलै डील रो, तीखै नाक-नक्स रो, गोरै निछौर रग रो, हळकी-हळकी मूछा रो, कद रो पूरो, चैरै सू हसमुख, घोडै पर चढयोडो उणा रै सामीं इण भात आय'र खड्यो हुयग्यो जाणै बादळा री ओट सूं चाद निकळग्यो हो।

लाडकवर अर विजयसिह री एक-दूजै सू निजरा मिळी। पलक झपकतै ई

छिण माय एक-दूजै नै इण भात लखायो जाणै दोनू ई एक-दूजै रै हेत रा तिस्सा है। लाडकंवर बोली, 'आप कुण हो ? अर आप अठै किया आया ? आप नै इण बात रो ध्यान नीं है कै सावण रै महीनै मे जठै छोरया हींडो हींडै, उठै किणी मरद नै नीं आवणो चाईजै ।'

विजयसिह चुपचाप खड्यो हो। बो लाडकवर रै रूप नै आपरी आख्या सू, आपरै काळजै माय उतार रैयो हो।

इतरै मे लाडो री एक सहेली बोली, 'अरे, आप गूगा हो का बोळा ? काई देखो हो फाड-फाड डोळा ? अबै अठै सू पधारो नीं तो मार-मार ।' दूजी सगळी सहेल्या खिल-खिल हसणनै लागी।

पण विजयसिह उणी मुद्रा माय चुपचाप खड्यो लाडो रै रूप नै निरख रैयो हो। उण नै लखायो जाणै उण माथै जादू हुयग्यो है।

लाडो खिल-खिल हसती छोरया नै चुप राखती थकी कैयो, हेमली। इण भात कोई गेलै चालतो बटाऊ जे भूल'र अठै आयग्यो है तो उण री हसी नीं उडावणी चाईजै।' पछै लाडो उण रै घोडै री लगाम पकड'र बोली 'इण भात लात मारणी चाईजै ।' अर लाडो विजयसिह रै घोडै रै ऐडी लात मारी जिण सू घोडो इतरै जोर सूं भाग्यो कै विजयसिह घोडै सू हेठै पडतो-पडतो बच्यो। उण रो घोडो जोर सूं भागतो जाय रैयो हो, अठीनै छोरयां खिल-खिल हंस रैयी ही। विजयसिह मुड-मुड छोरया कानी देख रैयो हो।

खेल-कूद'र लाडो अर उण री सहेल्या आप-आपरै घरै आयगी। अबै लाडो रै, ठैर-ठैर घुडसवार री सूरत मूढै सामीं आवणनै लागी। उण सू रात निकळणी ओखी हुयगी। उण नै लाग्यो, बो घुडसवार उण रै काळजै अर हिवडै मे ई नीं समायो है, बल्कि उण रै रूं-रूं मे समायग्यो है। बा आपरै बिछावणै मे पसवाडा माथै पसवाडा फोरण नै लागी। उण री हालत पाणी सू निकाळ्योडी मछली दायीं हुय रैयी ही। बा जठीनै देखै, बठीनै ई उण नै बो घुडसवार मुळकतो दीखै। लाडो री ऐडी हालत देख'र उण री मा पूछ्यो, 'काई बात है बेटा, आज थारो जीव-सौरो कोनी काई ?' ठकराणी उण नै आपरै ढोलियै माथै सागै सुलावती, छाती सू चिपावती बोली, 'म्हारी लाडकवर नै किणी री निजर लागगी काईं ? अबै म्है इण नै हींडो हींडणनै नीं जावण देऊली।'

आपरी मा री ऐडी बात सुण'र लाडो झिझक'र बोली, 'नीं, मा सा, म्हैं हींडो हींडण नै तो जाऊली। म्हनै ब्होत आछो लागै है। म्हनै नींद इण कारण सू ई नीं आय रैयी है, कै कद दिन ऊगै अर कद म्हैं हींडो हींडणनै जाऊ ?'

ठकराणी उण नै इण भात थपथपावणनै लागी जाणै छोटै टाबर नै थपथपाया करै है अर बोली, 'अच्छा, अच्छा, अबै तू थोडी-सी नींद लेयलै।'

पण नींद किण नै आवै ही। या आपरी मा, ठकराणी, रै सागै आंख मीच्योडी सूती रैयी अर उण घुडसवार रै सागै, मन रै मनसूवा माय गेलती रैयी।

उठी नै घुडसवार विजयसिह आखी रात आंख्यां माय सू जागतो काढ रैयो हो। बो सोच रैयो हो कै कद तो दिन निकळै ? अर कद बो उण गांव री, हींडो हींडती उण छोरी नै फेरू देखै ? जिकी उण रो काळजो काढ'र लेयगी।

लाडो बाप री लाडेसर ही। बाप ठाकर सुल्तानसिह लाडो नै घुडसवारी, ऊठ सवारी अर बदूक चलावणी आछी तरयां सू सिखायदी ही। घर में बरस डेढैक पैली साळै बनेसिह री भेज्योडी जीप नै चलावणै जैडै करतबां नै भी वा इतरै सांतरै ढग सू सीख लिया हा कै वा आछै-आछै जवानां रा छक्का छुडाय देवती ही। निसाणैबाजी मे तो लाडो रो निसाणो अचूक हो।

लाडो रा ऐडा करतब, उण री अल्हड जवानी, हाथ काळजै घालै जैडो रूप अर बैवती नदी रै चंचळ जळ दायी उण री चचळाटी मायै आखै गाव अर असवाडै-पसवाडै रै गावा माय रोज चरचा हुवती ही। लाडो री बातां नै सुण-सुण लोग आप-आपरै मूढा माय आगळी घाल लेवता हा।

विजयसिंह रो गाव, लाडो रै गांव सू पाच-सातैक कोस दूर हो। इण दोनू गावा रै बिचाळै रेत रा धोरा पसरयोड़ा हा। अर कठैई-कठैई खेजड्यां ही। विजयसिंह रै गाव मे भी लाडो री घणी चरचा ही। पण विजयसिह इण रै बाबत कीं नीं जाणतो हो। क्यूकै बो स्हैर मे पढतो-पढतो फौज री नौकरी मे चल्यो गयो हो। उठै किणी बडै ओहदै माथै हो। अबकै कई बरसां पछै बो आपरै माईता सूं मिलणनै छुट्टी आयोडो हो। चौमासै रो बगत हो अर उण री कीं भैस्या-गायां तीलो चरती-चरती कठीनै ई निकळगी ही। उणां नै जोवतो-जोवतो विजयसिह उण दिन हींडो हींडती नैणाऊ गाव री उण छोरयां रै बिचाळै चल्यो गयो हो, जठै बो आपरो दिल लाडो नै देय बैठयो हो।

विजयसिह आ भी नीं जाणतो हो कै ठाकर सुल्तानसिह रो ठिकाणो अर घराणो विजयसिह रै घराणै सू ऊचो है। लाडो नै भी घर-घराणै री ऐडी जाण-चीण नीं ही। उण दोनुवा मे हेत-प्यार हुवणो हो जिको उणां री पैली मुलाकात मांय ई हुयग्यो हो।

अबै लाडो दूजै दिन हींडो हींडणनै आई अर उण भात ई विजयसिह भी उठै आयग्यो। दोना नै एक दूसरे रै बारै मे जाणकारी हुई। अर उणा रो इण भात हींडै

रै नित रोज मिलणो सरू हुवग्यो। पण हेत री सुगध तो फैल्या बिना नीं रैवै। धीरै-धीरै आ बात सगळै गांव में अर गढ ताई पूगगी। ठाकर सुल्तानसिंह लाडो मार्थै गढ सूं बारै जावणै री रोक लगाय दी।

चैत रो महीनो अर गणगौर रो मेळो हो। सेठ दुलीचन्द कानी सूं इण मेळै सरजाम हुवतो रैयो है। इण बार भी उण कानी सूं सागीडो सरजाम हो। नैणाऊ गांव रै गणगौर मेळै मांय असवाडै-पसवाडै रै गावां रा लोग आवै। अर उठै घुड-दौड, ऊठ-दौड, कुस्त्यां, कबड्डी जैडै खेला माय, लोग आप आपरा करतब दिखावै। सेठ दुलीचन्द कानी सूं जीतणआळै नै सातरा इनाम दिरीजै।

इण बार मेळो देखण खातर ठाकर रो बेटो गोपाळसिंह भी मुम्बई सूं आयोडो हो। इण मेळै मांय विजयसिंह भी आयो हो।

ठाकर, लाडो नै मेळै मे जावण खातर मना करदी तो गोपाळ आपरै बाप नै कैयो, 'जी सा म्हैं इतरै बरसां सूं मेळो देखणनै अर म्हारी बैन री बहादुरी देखणनै आयो हूं। इण खातर म्है उठै सू घुडसवारी, ऊठसवारी अर निसानैबाजी री बेळा पैरण रा, खास कपडा लाडो खातर लेय'र आयो हूं। अर आप इण नै मेळै मांय जावण खातर मना कर रैया हो ? नीं जी सा म्हैं म्हारी बैन नै मेळै मांय सागै लेय'र जावूंला। उठै इण रा करतब देखूंला। पछै, इण री सोभा तो घणी-घणी दूर ताई हुय रैयी है। लोग आ सोचैला कै अबकै लाडकंवर रो भाई मुम्बई सू आयोडो है। वो आपरी बैन नै ई सागै नीं ल्यायो है ! आप तो जाणो हो, कै म्हे तो मुम्बई रा लोग हां। म्हारा तो लडक्यां खातर खुला विचार है।' वो लाड मे ईतरयोडै टाबर दायीं आपरी बात कैयी।

गोपाळसिंह नै ठाकर आप सूं इतरी खुली बात करता देख'र, करडी निजरा सूं कैयो, 'कंवर सा, आप आपरै खुलै विचारा नै, अर आपरी मुम्बई नै आप ताई राखो। म्हारै अठै आवो, उण टैम इण विचारां नै आप भेळा कर'र, आपरी गोजी मे घाल लिया करो समझरदार है, जे म्हारै घर-घराणै री आण विचाळै भळै कदैई कीं कैयो तो म्हारै सूं बुरो नीं हुवैला।' ठाकर रीस माय खासो लाल हुयग्यो हो।

गोपाळ भी तो टाबर ई हो। बाप रै रुख नै समझ'र आगै कीं नीं कैयो। पण वो आपरै मन मांय आ पक्की धारली कै लाडो जावैली तो ई मेळो देखणनै जाऊला, नीं तो नीं जाऊला।

अबै ठकराणी अर हीराबाई दोनूं ई ठाकर नै मनावणै मे लागोडी ही पण ठाकर मान नीं रैयो हो। इतरै मे सेठ दुलीचन्द गढ मे आयो अर बोल्यो 'ठाकर सा, मेळो देखणनै पधारो सा। अबकै आप अर आप रै परिवार खातर कै [illegible] सरजाम करयो है।'

ठाकर, सेठ दुलीचन्द नै मना नीं कर सक्यो। पण वो इतरो कैयो, 'सेठा, आप तो चाला हा, पण ठकराणी सा अर लाडकवर चाल'र काई करसी ?'

सेठ बोल्यो, 'कवर गोपाळसिंह आयोडा है, उणां नै तो सागै लैवो।'

ठाकर बोल्यो, 'उण नै आप कैवो तो, बो स्यात आपणै सागै चालै।'

ठाकर घर री बात नै सेठ सू छिपावण री चेस्टा करी। पण सेठ जिण टैम गोपाळसिंह कनै गयो तो बो गळगळो हुय'र सेठ नै सगळी वात बतावता थका कैयो, 'बाबोसा, म्है तो म्हारी बैन खातर ई मुम्बई सू आयो हूँ अर जी सा इण नै मेळै मे जावणै सू मना कर रैया है।'

सेठ थोडै कैयोडै मे ई सगळी वात समझग्यो अर सगळा नै ठंडा-मीठा कर'र आपरै सागै लेय'र मेळै कानी वहीर हुयग्यो। सगळा ई ठाकर री जीप मे बैठग्या। टुरती बेळा गोपाळ धनजी नै कैयो, 'धनजी, आप आपणै गढ सूं घोडै अर ऊठ नै ढग सू सजा'र दौड री ठौड पूगोला सा।'

लाडो रै नीली जीन री पैट, ऊपर गैरै लाल रग रो कुडतो, आख्यां माथै काळो चस्मो अर खुला केस। ऐडा ई बढिया गाभा गोपाळसिंह रै पैरणनै हा। इण दोनू बैन-भाया नै देखणनै सगळो मेळो उणां रै आसै-पासै भेळो हुयग्यो। असवाडै-पसवाडै रै गावा सू आयोडा लोग सोच रैया हा कै ऐ स्यात बारै सू आयोडा लोग है।

ठकराणी अर हीराबाई रै बिचाळै लाडो बैठी ही। ठाकर अर सेठ विचाळै गोपाळसिंह बैठ्यो हो।

मेळै मे सागीडी भीड ही। लोग-बाग आप-आपरै ऊठां, घोडां नै सजायोडा दौड खातर त्यार हा। दौड सरू हुवणै सूं पैली, लोगा नै एक जणो जोर सू कैयो कै इण बार तीन-चार साला पछै, गाव रै ठाकर सुल्तानसिंह री बेटी लाडकवर दौड रै मुकबला मे भेळी हुवैली।

अबै विजयसिंह रो हाल ऐडो हुय रैयो हो कै उण रो बखाण नीं कियो जा सकै। बो आपरै घोडै नै लियोडो उण घडी री उडीक मे हो जद बो आपरी लाडो नै आपरै घोडै माथै करतब दिखावै।

अठीनै जोग-सजोग सू आपरै दादै जीवणजी सू ओलै-छानै राजूसिंह उणी दिन नैणाऊ गाव मे आपरी बैन नै ढूढतो-ढूढतो पूग जावै है। उण नै आपरो घर छोड्यै नै ढाई मईना सू ऊपर हुयग्या हा। गाव रै भोळै-भाळै राजूसिंह खातर ओ समझणो तो दूर रैयो, बो ऐडी कल्पना भी नीं कर सकै हो कै उण री बैन इतरै बडै ठिकाणै मे इण भात है। बो तो उण भीड मे खड्यो हो, जिकी ठाकर अर ठाकर रै परिवार नै देख रैयी ही।

थोडी ताळ मे दौड सरू हुई। लोग-बाग ठाकर री बेटी रो मुकाबलो देखणनै घणाई उतावळा हुय रैया हा। अबै बा घडी भी आई। लाडो किणी नै ई जीतणै नीं देय रैयी ही। अर वा सगळै हारणआळै सवारा रै आपरै हाथा सू राखी बांध रैयी ही।

लोग-बाग लाडो री दौड, करतब अर रूप-रग नै देख'र अपणै आपनै भूल रैया हा। लाडो हर दौड मे जीत रैयी ही। अर हर दौड मे हारणैआळै रै राखी बाध रैयी ही।

राजूसिह रो मन हुयो कै म्है इण रै सागै दौडू अर इण सू राखी बधाऊ। पण म्हारै कनै तो ऊठ ई कोनी। बो एक जणै रै सामीं हाथा-जोडी कर'र ऊठ माग्यो अर उण री दौड मे सामल हुवणनै त्यार हुयो।

अठीनै गोपाळसिह मन माय आ सोच रैयो हो कै आज इण भरै मेळै माय जिको म्हारी बैन नै हरा देवैलो म्है उण रै सागै ई म्हारी बैन रो ब्याव करूला, चावै बो किणी जात रो हुवै ! जे म्हारो बाप इण बात नै नीं मानसी तो ई म्है मरजाद अर सगळै बंधना नै तोड'र एक मिसाल कायम करूला कै आदमी री जात-पांत कीं नीं हुया करै है। उण रा गुण अर करतब ऊचा हुवणा चाईजै। गोपाळसिंह इण विचारा माय डूब्योडो हो। अठीनै राजू अर लाडो बिचाळै ऊठ री दौड मे अबै ताई हुयोडी सगळी दौडा सू तकडी अर लूठी दौड हुय रैयी ही। लाडो राजू सूं हारणआळी ही, पण राजू नै ध्यान आयो कै उण नै इण सू राखी बधावणी है अर बो जाणबूझ'र लाडो सूं हारग्यो।

अबै लाडो उण रै राखी बांध रैयी ही तो उण रा हाथ धूज रैया हा अर राजू उण रै चैरै सामीं देख रैयो हो। उण नै लखायो कै इण छोरी नै तो म्हैं सुपनै में देखी ही। पण बो इण नै आपरो बैम समझ्यो अर बात आई-गई हुयगी।

अबै घुडदौड मे लाडो रो विजयसिह सूं मुकाबलो हो। विजयसिह फौजी जवान हो। डील मे घणी फुरतीआळो हो। उछळ-कूद मे उण रो कोई मुकाबलो नीं हो। पण घुडदौड में लाडो उण सू किलरा ई गुणा तेज ही। लाडो रो घोडो हवा दाई बैय रैयो हो। देखणिया लोग ताळ्यां री गडगडाट सू लाडो रो हौसलो बधा रैया हा। पण लाडो जाण-बूझ'र विजय सू हारगी।

विजय रै गाव रा लोग, अर दूजै गावा रा लोग विजय नै कांधा माथै उठा लियो अर उण री जय-जयकार करणनै लाग्या।

लाडो हँसतै-खिलतै चैरै सूं आपरै मा-बाप रै कनै गई। उणा रा चरण छूया। बै लाडो नै आसीस दी। उण रो लाड कर्यो।

ठाकर लाडो री हार रो कारण साफ ताडग्यो। वो जाणै हो कै लाडो विजय सू जाण-बूझ'र हारी है। पण इण कारण नै हीरावाई, गोपाळसिंह अर ठकराणी नीं समझ सक्या।

सेठ दुलीचन्द जीत्योडै लोगा नै ठाकर रै हाथां सू इनाम दिरवा रैयो हो। उण टैम गोपाळसिह, विजयसिह नै पूछ्यो, 'आप कठै रा हो ? आप री काई नाव है ?'

विजयसिह बतायो, 'म्हैं आप रै पडौसी गाव रै ठाकर रो बेटो हूँ। फौज मे लेफ्टीनैन्ट हू। इण दिनां म्हैं छुट्टी आयोडो हूँ।'

गोपाळसिह मन मे राजी हुयो कै अवै वो आपरै वाप नै वेधडक हुय'र कैय सकैलो कै बाई रो हाथ इण राजपूत फौजी जवान रै हाथां मांय देयदयो। जद गोपाळसिह आपरै बाप नै इण बाबत कैयो तो ठाकर साव टक्को-सो उथळो देवता थका कैयो, 'गोपाळसिह, तू टाबर है। तनै इण मामलै मे कीं नीं बोलणो चाईजै।'

बाप रो ऐडो उथळो सुण'र गोपाळसिह उतर्‌योडै मूढै सू आपरी मा अर हीराबाई कनै आय'र बैठग्यो। ठकराणी जद उण नै उदासी रो कारण पूछ्यो तो गोपाळसिह बतायो कै जी सा रो कैवणो है कै बै, बाई लाडो रो हाथ उण फौजी राजपूत रै हाथा मे नीं देवैला जिको बाई सू इण दौड माय जीत्यो है। क्यूकै उण रो ठिकाणो अर घराणो आपणै सू नीचो है। लाडो भी उठै ई खडी गोपाळसिह री बाता सुण रैयी ही। ठकराणी अर हीराबाई रै कीं कैवणै सूं पैली ई लाडो, गोपाळसिह नै धीरज सू समझावता थका कैयो, 'भाई सा, आप भी भली चिंता कर रैया हो ? जिका माईत बेटी री इच्छा माथै अकुस राखै जिका आपरी जाम्योडी बेटी नै, एक जिनावर सू बेसी कीं नीं समझै उण नै आपरी मनस्या सूं चावै जिकै खूटै सू बाध देवै जठै बा ऊमरभर का तो भूखी मरै, का उण माथै लाठ्या टूटै पण उण माईता नै इण री कीं चिंता नीं हुवै क्यूकै उण माईता नै घर-घराणो देख'र बेटी देवणी हुवै है बेटी री मनस्या अर उण रै भलै-बुरै री नीं सोचणियै माईता री बेटी आपरी जवानी नै मोम दायीं गाळ देवै, जद ताई उण नै घर-घराणो नीं मिळै। म्हैं ई तो ठाकर सुल्तानसिह रै घराणै रो खून हूँ। बै म्हनै जिण खूटै सू बाधैला म्है उणी खूटै सू बधूली. म्है म्हारै जी सा री मरजी मुजब ई राजी हूँ। आप इण री कीं चिंता नीं करो।'

ठाकर होको लियोडो, रावळै रै बारै खड्यो, लाडो रै मूढै सूं ऐडी सगळी बाता चुपचाप सुण रैयो हो। इण बाता सू ठाकर रो मन पिघळग्यो।

ठाकर मन मे सोच्यो कै जिण अणजाण जिलफ नै तू मन माय पीडा झेल'र

काळजै रै टुकडै दार्यी पाळी है। जिण खातर तू अणभाव्या दुख उठाया है । आज उण रो मन राखणो थारो धरम है। पछै इण रो कैवणो साव साचो है कै घर माय जलम्योडी बेटी, जिनावर दार्यी नीं हुवै है जिकी नै माईत चावै जिकै खूटै सू बाध देवै.. ।

ठाकर रै मन माय विचार आया कै जिका माईत, घर-घराणो अर ऊच-नीच, का हाड-खांप अर घराणै री आण-बाण नै लेय'र बेट्या रा साख-सबध, टाबर रै गुण-औगुण नै देख्यां बिना ई करै है उण रा नतीजा ऐडा हुया है कै कितरा ई घराणा पाणी रै रेळै बैयग्या है अर कितरा ई घराणा बरबाद हुयग्या है। अबै बगत है घराणा री ऊंच-नीच अर छोटै-बडै री धारणा नै मेटणै रो।

ठाकर ऐडै विचारा मे उळझ्योडो आपरी बैठक मे आय'र बैठग्यो। बो रावळै मे नीं गयो अर आपरो होको हुडहुडावणनै लाग्यो। ठाकर मन-ई-मन आपरो फैसलो बदळ लियो। पण बो आपरै बदळ्योडै फैसले नै किणी सू ई कैवणो नीं चावै हो। बो अजूं ई चावळ री कीणी नै पूरी सीज्योडी देखणी चावै हो।

ठाकर रै गाव मे लाडो नै लेय'र बाता हुवणनै लागी कै आपणै गाव रै ठाकर री बेटी ऐडी तगडी हुवैला कुण जाणतो हो ? पण उठै ई कई जणा कैय रैया हा कै आ आपणै गांव रै ठाकर री बेटी नीं है। इण लोगा रै बिचाळै रामूडो नाई भी चुपचाप खड्यो हो। अर जिको हमीदा नै पैलडै दिन ठाकर रो गढ बतायो हो, उण रो नाव हरखियो हो, बो भी उठै ई खड्यो हो। हरखियो बोल्यो, 'भाईडा, ठाकर री इण बेटी रै बारै मे दाळ मे कीं काळो है। क्यूंकै आज सू दस-पन्दरै बरसा पैली म्हैं एक लुगाई नै देखी जिण रै सूथण पैरयोडी ही, अर उण कनै गाभा माय लपेट्योडो एक टाबर भी हो। उण लुगाई नै म्हैं गढ रो गेलो बतायो हो। उण नै म्हैं गढ मे बडती भी देखी ही। पण गढ सू निकळती नै कोई नीं देखी।'

एक जणो बिचाळै ई बोल्यो, 'हरखिया, थारी तो वागजाळ अर अचपचोळी बाता करतै-करतै री सगळी ऊमर बीतगी। अर अजू ई तूं उणी ढग री बाता कर रैयो है। बडती नै देखी अर निकळती नै नीं देखी अबै पदाईस बरसा पछै ऐडी वातां रो काई मतलब है ?'

उठै खड्या लोग हररिये री खिल्ली उडावणनै लाग्या। इतरै मे सेठ दुलीचन्द री हवेली सूं धनजी दरोगो आवतो दीस्यो। वै लोग बोल्या, 'आज धनै नै पकड'र पूछो कै जिकी ठाकर रै घर मे बेटी है, बा किण री है ?' अर वै सगळा मोथा मिल'र धनजी नै रोड लियो।

धनजी ठाकर रै जोर माथै अकड'र बोल्यो, 'आप सगळा थोका हो फर गैला

? जिको ऐडी फागडदी बाता करो हो। आप नै बेरो कोनी कै आ ठाकर री वेटी है ?' धनजी पूठो उणा सामीं सवाल फेंक दियो।

एक जणो बोल्यो, 'अरे ठाकर री बेटी तो हुवता ई मरगी ही नी ? पछै ठकराणी रै बेटी भळै कद हुई ही रे धनिया ? क्यूं मिजळी बाता करै ? साची-साची बता ।'

अबै धनजी थूक गिटतो-गिटतो बोल्यो, 'अरे भई, ठकराणी आपरै भाई री बेटी नै खोळै ली ही। पछै वा आपरो दूध पा'र उण नै पाळी-पोसी . अबै वा ठाकर री बेटी हुई, का नीं हुई ?'

अबै कई जणा कैवणनै लाग्या 'अरे भई, ठाकर री खोळायत बेटी हुई। ठाकर री खुद री बेटी तो नीं हुई ?'

धनजी उठै सू जिया-तियां आपरी ज्यान बचा'र गढ माय आयग्यो। अठीनै रावळै मे ठाकर, ठकराणी अर गोपाळसिह रै बिचाळै, लाडो अर विजय नै लेय'र बातचीत चाल रैयी ही। ठाकर बोल्यो, 'विजय रै घराणै, ठिकाणै अर जात नै लेय'र म्हारै अर इणा रै बिचाळै सात पीढ्यां सूं ई साख सम्बन्ध नीं हुयो है, पछै म्हैं किया करू ?'

ठकराणी बोली, 'टाबर फूठरो है। फौज मे नौकर है। गोपाळसिह रै जच्योडी है, अर छोरी रो भी थोडो-घणो उठै ई मन है। अबै आप री हामळ री दरकार है।' पण ठाकर कीं नीं बोल्यो। पूठो ई आपरी बैठक में आयग्यो।

बदळै

[illegible]

राजू रै [illegible] [illegible] जीवणजी अर [illegible] राजू रै [illegible] [illegible] तीन महीना [illegible] [illegible] जीवणजी रै [illegible] [illegible] [illegible] राजू रै [illegible] [illegible] पण [illegible] नै जीवणजी सूं [illegible] लेणो-देणो कोनी हो।

छोगजी अर लालजी रा घर, गांव मांय धापतै-पावतै घरां मांय सूं हा। धणै लालजी तो गांव रो बैहरो हो। लोगां नै ब्याज माथै पइसा बौरतो हो। पण बो किण सूं ई वेहक रा पइसा नी लेवतो हो। उण री बेटचां रै ब्याव मे पूरो गांव, काम-काज माथै लाग्योडो हो। ब्याव आडै अजूं ई आठ-दस दिन बाकी हा।

राजू आपरै घरै पूग्यो। माना घणी राजी हुई। जीवणजी राजू नै देख'र राजी तो नीं हुयो, पण उण री चिंता मिटगी। राजू रै हाथ पर मेडै मे बांध्योड़ी राखी अजूं ई बाध्योड़ी ही। जिण नै जीवणजी देख तो ली, पण राजू सूं [illegible] कैयो। जीवणजी, राजू रो बो हाथ, गडासै सूं वाढण री ताक मे है। [illegible] सोच्यो कै ओ म्हारै मना करणै रै पछै ई राखी बांध'र आयो है [illegible] रो हाथ ई बाढ न्हाखूला।

राजू नै दादै री इण मनस्या रो बेरो पड़ग्यो। बो [illegible] ब्याव रो काम करावणनै लागग्यो। पण जीवणजी [illegible]

ब्याव पछै तो घरै आवंलो। देखू, कितरा'क दिन ओ आपरै हाथ नै बचावै है !

एक दिन गोपाळ आपरै बाप नै कैयो, 'जी सा, अवै म्हैं थोडै दिना पछै मुम्बई जाऊलो। जे आप रो हुकम हुवै तो म्है अर लाडो एक दिन सिकार माथै जावा। उठै म्हैं बाई री निसाणैबाजी नै भी देखूला अर सिकार भी लेय आवाला। सुण्यो है, कै बाई जिण भात ऊठदौड अर घुडदौड मे हुसियार है, उणी भात निसाणैबाजी मे भी तकडी है।'

ठाकर रै जचगी अर उणा नै सिकार माथै जावण री इजाजत दे दी। दूजै दिन दोनू बैन-भाई दो घोडा लिया अर आप-आपरी बन्दूका ले'र सिकार माथै निकळग्या।

जोग-सजोग सू उणा नै दो हिरण दीख्या। दोनू बैन-भाई उणा रो लारो करता थका अळघी-अळघी दिसावा कानी फटग्या। फट्या तो ऐडा फट्या कै दोना नै ई एक-दूजै रो बेरो नीं लाग्यो। अर दोनुवा रै ई हिरणिया हाथ नीं आया। अर भूखा-तिस्सा री हालत बिगडी जिकी पासती मे। छेकड, गोपाळसिह तो दो घडी रात गयां पछै घरै पूगग्यो, पण लाडो रो कीं अतो-पतो ई नीं लाग्यो।

अवै पूरो गढ चिता माय डूबग्यो। गढ में उथळ-पुथळ हुवणनै लागी। ठकराणी अर हीराबाई री हालत तो देखणजोग ई नीं ही। पूरो गढ रातभर जाग रैयो हो। लोग-बाग असवाडै-पसवाडै री रोही में ढूढ रैया हा। पण लाडोबाई रो तो कीं बेरो ई नीं लाग रैयो हो।

ठाकर सोच्यो, टाबरा नै घणी छूट देवणै सू कदैई-कदैई मा-बाप नै अणकैयी अणूती चिंता अर झींझटा रो सामेळो करणो पडै पण काई करू, म्हारो राम निकळग्यो हो जिको म्हैं इण दोनूं बैन-भाया नै छूट दे दी ही। दिनूगै, भाख फाटता ई सेठ दुलीचन्द आयग्यो। बो आपरै सागै एक पागी (खोजी) नै भी ल्यायो। ठाकर नै लाडकवर नै ढूढण सारू उठै सूं जीप लेय'र टुरण री बात कैयी। जिण बेळा ठाकर, दुलीचन्द, बो पागी अर गोपाळसिंह जीप ले'र जावणनै लाग्या तो ठकराणी अर हीराबाई भी जिद कर'र उणां रै सागै जीप मे बैठग्या।

ठाकर मन मे तेवडी कै सगळा सू पैली विजयसिह रै गाव चाला, स्यात लाडो उठीनै नीं चली गई हुवै। बै सगळा विजयसिह रै गाव पूग्या। विजयसिह आपरै घर माय हो। विजयसिह उणा नै इण भात देख'र हक्को-बक्को रैयग्यो। जद विजयसिह नै विगत बताई तो विजयसिह कैयो 'लाडकवर अठै तो नीं आई।' अर बो चिता जतातो थको कैयो, 'जे आप रो हुकम हुवै तो म्हैं आप रै सागै चालू अर आप री मदद करू। क्यूकै थोडो-घणो म्हैं भी पागी रो काम जाणू हू। स्यात म्हैं लाडो रै घोडै रै खोजा सू लाडो रो बेरो कर सकूला।'

पन्दरै

सिञ्या पड़गी ही। गाव रै घरां मे चूल्हा अर हारां सूं उठतो धूवो अर गौधूळी सू गुदळायोडो सगळो गाव अधारै मे डूबतो जाय रैयो हो।

गांव मे जीप रै बडणै सूं पैली, बन्दूक चालण री आवाज सुणीजी। जीप भळै रुकी। बदूका री गोळ्या री साय साय करती आवाजां, घणी आवणनै लागी। गांव रै माय सू सुणीजतो करळाटो उणा रा कान खडा कर रैयो हो। उणां नै लाग्यो, जाणै लोग आपरी ज्यान बचावण खातर अठीनै-उठीनै भाग रैया है।

इतरै मे गांव मांय सूं भागतो एक आदमी उणा नै दीख्यो। बै उण नै पूछ्यो तो बो डरतो-डरतो बतायो कै गाव मे ठाकर लालजी री बेट्यां रो ब्याव है। इण मौकै डाकू गाव नै घेर राख्यो है। बै लूट-मार कर रैया है। गोपाळसिंह अर विजयसिंह आप-आपरी बन्दूका मे गोळ्यां भरली अर गाव री मदद सारू त्यार हुयग्या। ठाकर भी उणा नै इजाजत देय दी।

सेठ सोच्यो, जद मौत रै मूढै आय ई गया हां, तो अबै गाव री मदद करणो मिनख रो धरम है। ठकराणी, आपरी बेटी री चिंता कर रैयी ही। पण हीराबाई अबै गाव मे बेगी बडणै री उतावळ कर रैयी ही। हीराबाई गाव री एक-एक गळी जाणै ही। बा जीप नै सीधी ठाकर छोगजी री कोटडी आगै लेजाय'र रुकवाई।

उठै उणा नै बतायो कै ठाकर छोगजी, लालजी, जीवणजी अर इणा रै घरा री लुगाया-पताया नै अर गांव रै बीजै दीखतै लोगा नै डाकू रौड राख्या है। अर उणा नै मार रैया है। पीट रैया है। एक छोरी मरदानै भेस मे घोडै पर चढ्योडी, एकली ई उण डाकुवा रो मुकाबलो कर रैयी है।

बै देख रैया हा कै गाव मे भागमभाग बुरी तरिया सू मच्योडी है।

अबै गोपाळ अर विजय रो खून उबळणनै लाग्यो। बै दोनू बदूका लेय'र उण ठौड कानी, जोर-जोर सू हेला मारता भाग रैया हा कै 'लाडो म्हे आयग्या हा

लाडो म्हे आयग्या हा तू हिम्मत मत हारी, तू हिम्मत मत हारी ।' बै दोनू खाथा-खाथा भागता उण ठौड पूग्या जठै लाडो एकली डाकुवा सू लड रैयी ही।

जद उणा री जीप गाव मे बड़ी ही तो गावआळा भी उणा री जीप नै डाकुवा री जीप समझी। अर बै डरग्या हा। पण उणा रै सागै चोखै गाभा माय लुगाया नै देखी। फेर विजय अर गोपाळ नै लाडो लाडो हेलो मारता अर जठै मुठभेड हुय रैयी ही, उठीनै भागता देख्या तो गाव रा घणकरा लोग उणा रै लारै डाकुवा कानी भागणनै लागग्या।

अबै लाडो री हिम्मत बधगी। पण जिण बेळा डाकू, राजूसिह नै लाडो कानी भागतां देख्यो। अर उण रै लारै जीवणजी नै भागता देख्यो, तो डाकू आपरी गोळी राजूसिह पर दागी। इण बेळा राजूसिह नै बचावण खातर लाडो बीच मे आयी तो बा गोळी लाडो रै जीवणै पग री पींडळी मे आय'र लागी। जीवणजी अर राजू तो दोनू ई बचग्या। पण लाडो घायल हुय'र पडगी।

अठीनै गोपाळसिह अर विजयसिह डाकुवा रै सामीं मोरचो बाध लियो अर जम'र गोळ्यां चाळणनै लागी। डाकू घबरायग्या। कीं उणा माय सू घायल हुयग्या। कई जणा बचग्या। पछै डाकू उठै सू आपरी ज्यान बचा'र रात रै अधेरै माय भाग छूट्या। पण गोपाळ अर विजय अजूं ई मोरचो सभाळ्योडा हा। गाव रा लोग जोर-जोर सू हाको कर रैया हा, 'मारो मारो डाकुवा नै मारो ।'

उठीनै घायल हुयोडी लाडो नै जीवणजी आपरी छाती सूं लगा-लगा'र लाड करतो कैय रैयो हो कै 'बेटी, तू बेटी नीं, कोई देवी है। तू म्हारा अर म्हारै राजू रा प्राण बचा'र म्हारै माथै जिको उपकार कर्‌यो है, म्हैं उण रै बदळै तनै काई देवू .? थारै मात-पिता नै धिन। धिन है बो घराणो जठै थारै जैडी बेटी जलम लियो। बेटी, धिन है उण रात नै, जिकी रात थारै जैडी सूरमा अर लूठै होसलै री बेटी नै जलम दियो अर धिन है उण मा नै, जिकी तनै जलम दियो।'

लाडो जीवणजी रै लाड अर बखाण री परवा कर्‌या बिना ई, उण घायल अवस्था मे बा लालजी, छोगजी अर बीजै लोगा नै डाकू बांध'र छोडग्या हा, उणा नै खोलण मे लागगी। जीवणजी ऐडी सगळी बाता देख रैयो हो। वो आपरी लुगाई पारो नै, जिकी बुरै हाल में उण रै सागै ई ही, उण नै कैय रैयो हो, 'देख, देवै री मा देख, बेटी हुवै तो ऐडी, जिकी एकली पूरै गाव री ज्यान बचाली अर घायल हुयोडी सेरणी दायीं उण री रीस अजू ई उण रै डील माय नावड नीं रैयी है। देख, आ किण फुरती सूं सगळै लोगा नै बचावण खातर लाग रैयी है।'

जीवणजी कैयो, 'देवै री मा, आज म्हैं अर तू तो मरता ई । पण जुलमी

डाकू आपणै राजू नै भी जीवतो नीं छोडता पछै आपणो तो नावगो, बंस अर घराणो ई मिट ज्यावतो। वाह रे भगवान, वाह दुनिया मे बेटी भी अेडी हुया करै है । ओ तो म्हनै ठा ई कोनी हो।'

गोपाळ अर विजय लाडो अर उणा लोगा कनै पूगग्या अर बै लाडो नै घायल हुयोडी देखी तो उणा रा होस उडग्या।

विजय, घायल हुयोडी लाडो नै आपरै हाथा माय लियोडो, उण रै सागै गोपाळ बन्दूका नै उठायोडो अर गाव रै घणकरै लोगा माय छोगजी, लालजी अर बीजा लोग लारै-लारै चाल रैया हा। गेलै मे जीवणजी री कोटडी ई नैडै पडै ही। छोगजी कैयो, 'इण बाई नै जीवणजी री कोटडी मे बिठा'र पैली पाटा-पोळी करद्यो, पछै म्हारी कोटडी चालस्या।'

अबै जीवणजी अर पाना लोगा नै कैवणनै लाग रैया हा, 'धिन-घडी, धिन-भाग म्हारा, जिको ऐडी हीरै जैडी बेटी रा पग म्हारै घर माय होय रैया है। अबै म्हे इण नै कठै'क राखा ?'

राजू चितबगो-सो लाडो, गोपाळ अर विजय नै देख रैयो हो कै ऐ लोग हुवणा तो बै लोग ई चाईजै जिका नै नैणाऊ गाव मे म्हैं देख'र आयो हो। पण आ जाण-चीण काढणै री घडी नीं है। अबै तो सगळा सू पैली इण बाई री ज्यान बचै, ऐडो उपाय हुवै तो आछो है । पछै ऐ सगळी बातां पूछूंलो ।

उठीनै छोगजी री कोटडी मे जद ठाकर-ठकराणी कनै लाडो रै गोळी लागणै अर घायल हुवणै री बात पूगी तो उणा री चिंता रो पार नीं हो।

लाडो री पींडळी मे बन्दूक री गोळी नीं ही। कोरो घाव हो। जिण माथै गाव रै हिसाब सूं पाटा-पोळी हुय रैयी ही अर लाडो होस में आपगी ही। बा आपरी मा सा, हीरा बाई, जी सा अर काकोसा दुलीचन्दजी सूं मिलण खातर उतावळी हुय रैई ही।

इण भात दिन ऊगग्यो। ठाकर, ठकराणी, हीराबाई, सेठ दुलीचन्द, सगळा लाडो कनै जीवणजी री कोटडी पूग्या। आगै आधै सू घणो गाव रातभर जागै हो। छोगजी अर लालजी भी उठै ई हा।

अबै हीरावाई सगळा सू पैली छोगजी अर लालजी नै मुजरो करयो। पछै जीवणजी अर पाना नै। ऐ सगळा लोग हीराबाई रै भेस मे हमीदा नै झट पिछाणली। अर आ बात जद गाव मे पूगी तो एक गांव रा दो गाव उठै भेळा हुयग्या। जीवणजी री कोटडी काठी भरीजगी।

हमीदा, हीराबाई रै रूप मे समूचै गांव रै सामीं सीनो ताण्योडी सेरणी दायीं ऊभी ही। छोगजी अचरज सू पूछ्यो, 'हमीदा तू ?'

'हां ! म्है हमीदा। आप री दाई हमीदा। आप रै गाव री दाई हमीदा ठाकर सा।' हमीदा री आवाज मे खरोपण हो। सच्चाई ही। सागै-सागै जोम हो।

अबकै जीवणजी भी उणी ढग सू पूछ्यो, 'तू हमीदा है ?' जीवणजी री फाट्योडी आख्या फाट्योडी रैयगी।

अबै हमीदा बोलणनै लागी, 'हा, जीवणजी बाबो सा, म्है हमीदा हूँ। आ आप री पोती, आप रै देवै अर पारो री बेटी।' लाडो कानी इसारो कर'र कैयौ। पछै बा बतावणनै लागी, 'ऐ नैणाऊ ठिकाणै रा ठाकर सुल्तानसिह। ऐ इणा रा जोडायत ठकराणी सा। ऐ लोग म्हनै सरण दी। इण नै आपरी बेटी बणा'र पाळी-पोखी।' पछै हमीदा बोली, 'ऐ ठाकर सा रा बेटा गोपाळसिह। इणा रै सागै इणा रै पडौसी गाव रै ठाकरा रा कवर विजयसिह। अर ऐ नैणाऊ गाव रा सेठ दुलीचन्दजी।'

सगळो गाव-राव हमीदा कानी अर लाडो कानी अचरज सू देख रैयो हो। हमीदा री बाता सगळा चुपचाप गौर सू सुण रैया हा। नेजू भीड़ मे खड्यो सोच रैयो हो कै अबकै भाभी बाजी मारली।

हमीदा जीवणजी रै नैड़ै जाय'र, सगळै गाव नै सुणावती थकी कैयो, 'जीवणजी बाबो सा, आ बा ई बेटी है, जिकी रै प्राणा रा आप प्यासा हा। आ बा ई बेटी है, जिकी री बैनां अर भुवावा नै, आप, आपरै घराणै री आण री बळी चढाई ही। आ बा ई बेटी है, जिकी रा मा अर बाप आप रै घराणै री पापी रीत रै कारण आधी ऊमर में गया परा। आ मा करणी अर लक्ष्मी रै रूप मे बा ई बेटी है जिकी आज दुरगा, काळी अर चण्डी रै रूप मे डाकुवा माथै टूट पडी अर पूरै गांव री स्यान ई नीं . ज्यान बचाई है।

'जय-जयकार बोलो इणां ठाकर अर ठकराणी री, जिका मिनख धरम नै पल्लै राख'र एक अणजाण मिनख रै अस नै आपरी बेटी बणाई। उण नै पाळ-पोख'र बडी करी। अर उण रा कितरा ई रूप संवारया कैवता-कैवता हमीदा परसेवै सूं बुरी तरिया भीजगी ही। उण रै डील माय एक धूजणी-सी हुय रैई ही। पछै बा पाना कानी मुडी अर धीरज अर प्यार सूं कैयो, 'मा सा, जे इण रै सागै हुयोडो भाई जीवै है तो आप देखो कै उण रै जीवणै पग रै पजै माथै अर इण बाई रै जीवणै पग रै पजै माथै एक जैड़ो धोळै लसणियै रो दाग है।'

पछै बा सगळां कानी मुड'र बोली, 'म्है लाडो री मा सू वादो करयो, जिण री लाज ऊपरलो राखी है। अबै म्है खुदा रै घरै लाडो री मा पारो नै म्हारो मूढो दिखावणजोग हूँ। अर उण नै उठै जाय'र कैवूली कै थारी वेटी जीवै है थारी वेटी नै मालिक बचाली है . ।' हमीदा बोलती-बोलती एकदम बद हुयगी। अर उण रो डील बरफ-सो ठडो हुयग्यो।

हमीदा री इण भात मौत नै देख'र लोग हक्का-बक्का रैयग्या। कई जणा तो भाठै दायीं हुयग्या अर कई जणा मे सुन्न बापरगी।

अठीनै लाडो रो इण भात मिलणो अर उठीनै हमीदा रो इण भात मरणो, सगळै गाव नै लाग रैयो हो, जाणै बादळा री घणघोर घटा रो मडाण हुयो पण सूकी धरती तिस्सी री तिस्सी रैयगी ।

लाडो ठाकर अर ठकराणी री छाती माय आपरो सिर देय'र कूक रैयी ही अर कैय रैयी ही- 'जी सा ओ काई हुय रैयो है ? नीं जी सा नीं मा सा म्है थारी बेटी हूँ। म्है थारी बेटी हूँ। हीराबाई जाता-जाता म्हारै साथै ओ काईं धोखो करग्या ?'

ठाकर-ठकराणी, लाडो नै पुचकार रैया हा अर कैय रैया हा 'नीं बेटा, तू म्हारी बेटी है । जीवणजी अर पाना थारा दादो सा अर दादी सा है।'

पण बा कैय रैयी ही, 'नीं जी सा- नीं जी सा ।'

राजूसिह बोल्यो, 'बाई सा, बाई लाडकवर, आप म्हारा बैन हो। आप म्हारै राखी बांधी ही नी। सुपनै मे भी अर उण दिन ऊठा री दौड मे म्हैं आप सू राखी बधावण खातर जाण-बूझ'र हार्‍यो हो। पछै, ओ देखो म्हारै जीवणै पग माथै अर आप रै जीवणै पग माथै एक-सो दाग है ।' सगळा लोग देख्यो, बात बिलकुल साची है।

अठीनै गोपाळसिह सोच्यो एक दिन मुम्बई मे म्हनै मामोसा थोडो-सो बतायो तो हो, पण म्हैं उणा री बात नै मसकरी समझ'र कदैई म्हारी मा सा का जी सा नै नीं पूछ्यो।

सेठ दुलीचन्द सोच रैयो हो कै ठाकर-ठकराणी, इतरा गैरा अर मानखैआळा मिनख है, ओ म्है नीं जाणतो हो। बो ठाकर-ठकराणी नै मन ई मन निवण कर रैयो हो।

विजयसिह चुपचाप खड्यो सगळी बाता देख रैयो हो अर सुण रैयो हो। उण रै मन माय हमीदा रै त्याग अर मिनख धरम री पाळणा करणै रै धीरज नै लेय'र अथाग श्रद्धा ही।

छोगजी, लालजी अर गाव रा लोग बात री सच्चाई नै ताडग्या। सगळा री आख्या माय हमीदा खातर आसू हा। छोगजी लोगा नै कैयो, 'हमीदा लुगाई रै रूप मे एक देवी ही। उण रै त्याग अर सकळप री दुनिया माय चरचा चालसी अर अमर रैसी। अबै ऐडी त्याग री देवी री थिर जुगती करणो गाव रो धरम है। म्हारी ऐडी

राय है कै इण री कबर, पारो रै समसाण रै नैड़ी बणाई जावै ।' सगळै लोगा रै छोगजी री बात जचगी। हमीदा नै पारो रै नैड़े सदा खातर कबर मे सुवाणदी।

उण रै बाद, ठाकरां री आपस मे बातचीत हुई। सगळी जाण-चीण मे होदा अर नैणाऊ रै ठिकाणा रो आपस मे भाईपो हो अर एक ई गोत रा राजपूत हा। विजयसिह उण घराणै सू हो, जठै जीवणजी री भूवा दादी दियोडी ही। जिण रै दुख रै कारण सू जीवणजी रै घराणै मे बेटऱ्या नै हुवता ई मारण री रीत पडगी ही। पण अबै जमानो अर बगत बदळग्योडो हो। गोपाळसिह अर राजूसिह बोल्या, 'अबै पीढयां री इण दुसमणी अर म्हारै घराणै री इण खोडीली रीत नै म्हे म्हारी बाई लाडो नै विजयसिह नै देय'र तोड़ाला।' जीवणजी री कोटडी मे लाडो नै विजयसिह नै देवण री हामळ भरीजगी।

पण अजू ई एक फैसलो और बाकी हो कै नैणाऊ रै गढ अर होदा रै जीवणजी री कोटडी रा आगणा लारली चार-पाच पीढ्या सू कवारा है। अबै बाई लाडो री चंवरी किण रै आंगणै मडै ? सगळा बैठ'र फैसलो करयो कै बाई लाडो रो ब्याव तो ठाकर सुल्तानसिह रै आगणै हुवैला अर लालजी री दो बेटऱ्या माय सू एक री चवरी ठाकर जीवणजी रै आगणै मडैला।

अबै ठाकर आपरै गाव नैणाऊ पूग्यो। लोग-बाग बाई लाडो नै लेय'र आवणै री खुसी मे गढ माय भेळा हुवणनै लाग्या। सगळा नै बात रो बेरो पड्यो। अबै हरखियो, बोल्यो, 'रै म्है तो गाव नै कैयो तो म्हारी बात कोई नीं मानी।' अर रामूडो नाई बोल्यो, 'म्हारो तो पेट रो आफरो म्हारै माय रैयग्यो।' धनजी हमीदा रो सुण'र चेताचूक होयग्यो। कई दिना ताई रोटी नीं खाई। लाडो रै ब्याव रो सुण'र बनेसिह मुम्बई सू आयग्यो।

जद हमीदा रै त्याग अर पारो रै धीरज अर सबर री बाता असवाडै-पसवाडै रै गावा ताईं पूगी तो लोग-बाग उठै थोडै दिनां माय एकै कानी पारो रो मिदर अर एकै कानी हमीदा री कबर पक्की बणा'र उणां री पूजा अर मानता करणनै लाग्या।

जीवणजी रोज उठै आवतो अर अरडावतो कै 'म्हैं पापी हूँ म्हैं हत्यारो हूँ म्है जुलमी हूँ म्हनै माफ करदै पारो म्हनै माफ कर दै हमीदा ।'

बो पारो रै मिदर रै पगोथिया सूं अर हमीदा री कबर सू रोज माथो फोडतो-फोडतो नीं जाणै कद इण ससार सू चल बस्यो ?